Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

कांदा ने सो बार पांणी सूं धोवियां,
तो ही न मिटे तिणरी वास।
ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेश दीये घणो,
पिण मूल न लागे पास।।

प्याज को सौ बार पानी से धोने पर भी उसकी गंध नहीं मिटती। इसी प्रकार अविनीत को गुरु कितना ही अधिक उपदेश दे, उसकी आदत नहीं बदलती।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 12 • 23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 21-12-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

जीवन में कमाऊ पूत की तरह करें धर्म साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

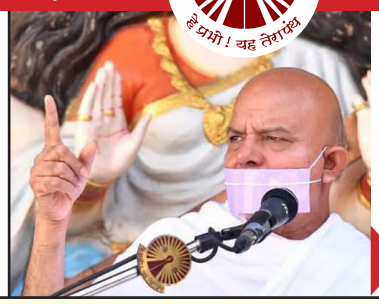

मन रुपी चित्रपट्ट पर पिक्चर लाने वाला है मोहनीय कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address Here

ज्ञान के साथ हो विवेक और संयम की चेतना : आचार्यश्री महाश्रमण

सन् 2027 के चतुर्मास के बाद सन् 2028 का मर्यादा महोत्सव भी वृहत्तर दिल्ली में

वड़ोदरा।
14 दिसम्बर, 2024

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी जाम्बुवा से लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर वड़ोदरा के लाल बहादुर शास्त्री विद्यालय में पधारे। अमृत देशना प्रदान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी होता है। चिन्तन का स्तर सब में एक समान न भी हो पर सामान्यत व्यक्ति के चिन्तन में विवेक हो, कुछ गहराई हो। हमारी चेतना में अनन्त ज्ञान सन्निहित है। किसी का अनन्त ज्ञान कुछ-कुछ प्रकट होता है, किसी के ज्यादा तो किसी के कम प्रकट हो जाता है। परन्तु ऐसा कोई जीव नहीं होता जिसमें बोध की स्थिति न हो। यह मानो प्रकृति की व्यवस्था है कि प्राणी में यत्किंचित बोध की स्थिति अवश्य रहेगी। तरतमता हो सकती है। जैन दर्शन के अनुसार न्यूनतम क्षयोपशम भाव तो हर प्राणी में होगा। एकेंन्द्रिय जीवों में भी मति-श्रुत बताये गये हैं।

आदमी को अपने विवेक, चिन्तन का उपयोग करना चाहिए। जिस काम में लाभ का पलड़ा भारी हो, वह कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। थोड़े लाभ के लिए बहुत की हानि कर लेना बुद्धिमत्ता की बात नहीं होती। आज मिगसर शुक्ला चतुर्दशी - हाजरी का दिन है। चारित्रात्माओं के शील-महाव्रत कितनी बड़ी सम्पदा है, पर उसका निदान न करें अन्यथा थोड़े के लिए बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। मूढ़ता के कारण आदमी बड़ा नुकसान उठा लेता है। ज्ञान के साथ विवेक, संयम की चेतना, अमोहता रहनी चाहिए। मोह से साधु नुकसान में जा सकता है।

गृहस्थों के लिए भी यही बात है कि थोड़े लाभ के लिए धर्म की सम्पदा को नहीं खोना चाहिए। भौतिक लाभ के लिए धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़ी कठिनाई आये तो आये पर धर्म को न छोड़ें। अर्हन्नक श्रावक का उदाहरण हमारे आगमों में मिलता है। एक बार डूबने से एक भव बिगड़ सकता है पर बार-बार भव-भव तो न बिगड़े। आदमी किसी भी क्षेत्र में काम करे, अपने धर्म को न भूले। जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, मैत्री, अहिंसा का भाव रहे। (शेष पेज 14 पर)

धर्माराधना से अपनी आत्मा को मित्र बनाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

कोयली।
15 दिसम्बर, 2024

युग प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी वड़ोदरा शहर के बाहरी क्षेत्र कोयली में पधारे। आगम वाणी की व्याख्या कराते हुए महामनीषी ने फरमाया दुनिया में मित्र होते हैं। व्यवहार की दुनिया में मित्र सुख-दुःख में सहयोगी बन सकते हैं। मित्रता का अनुबन्ध अनेक जन्मों तक चलता रहता है। आचार्यश्री भिक्षु के ग्रन्थों में मिलता है कि मित्र से मित्रता का सम्बन्ध और बैरी से शत्रुता का बन्ध अनेक जन्मों तक रह सकता है।

शास्त्र में एक बात बताई गई है कि आत्मा मित्र है, और आत्मा ही शत्रु है। पुरूष ! तुम्हीं तुम्हारे मित्र हो, फिर बाहर क्या मित्र की खोज कर रहे हो?

आदमी अपनी आत्मा को मित्र बना ले तो सुख की प्राप्ति भी संभव हो सकती है। अहिंसा धर्म की जो साधना कर रहा है वो आत्मा को मित्र बना रहा है। यदि वह हिंसा में प्रवृत्त होता है तो आत्मा दुश्मन बन जाती है। व्यक्ति सच्चाई के माग पर चलता है, ईमानदारी का अनुशीलन करता है तो आत्मा मित्र बन रही है। झूट-कपट करता है, दुर्भावना करता है तो आत्मा दुश्मन बन जाती है। सार रूप में जहां धर्म का आचरण है वहां आत्मा मित्र बन जाती है। जहां अधर्म-पाप आचरण है तो आत्मा शत्रु बन जाती है।

अगर पाप का उदय है तो मित्र भी आदमी की सहायता नहीं कर सकते हैं। कर्म अपने करने वाले का अनुगमन करता है। कृत कर्म का आदमी स्वयं ही फल पाता है। कोई किसी का कष्ट दूर नहीं कर सकता, कोई किसी की सहायता नहीं कर सकता। शत्रु आत्मा दुःख देने वाली न बने इसलिए धर्म के पथ पर चलना चाहिए।

(शेष पेज 15 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

संयम और साधना की यात्रा है अंतर्यात्रा : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने विद्यार्थियों को दी डिजिटल डिटॉक्स की प्रेरणा

पोरगांव।
12 दिसम्बर, 2024

जन-जन के नारायण, आचार्य श्री महाश्रमणजी पोरगांव के श्रीनारायण ग्लोबल स्कूल में पधारे। पूज्यवर ने अपने पावन प्रवचन में अंतर्यात्रा और बाह्ययात्रा के गहरे महत्व को समझाते हुए कहा कि हमारी यात्राएँ विभिन्न नामों से चलती हैं—कभी अहिंसा यात्रा, कभी अणुव्रत यात्रा, और कभी बिना किसी नाम के भी।

आचार्यश्री ने बताया कि यात्रा दो प्रकार की होती है—अंतर्यात्रा और बाह्ययात्रा। अंतर्यात्रा आत्मा के भीतर की यात्रा है। प्रेक्षाध्यान पद्धति का दूसरा चरण अंतर्यात्रा का ही एक प्रयोग है। प्रतिक्रमण में 'खमासमणो' का 'जत्ता' शब्द अंतर्यात्रा का परिचायक है। यह संयम और साधना की यात्रा है।

बहिर्यात्रा तो भले ही सक्षम साधु या व्यक्ति करते हैं किन्तु अंतर्यात्रा को तो कोई अक्षम साधु भी कर सकता है। बाह्ययात्रा में पदयात्रा और ग्रामानुग्राम यात्रा सम्मिलित होती है। बाह्ययात्रा के साथ अंतर्यात्रा को भी जीवनभर अपनाया जा सकता है। बाह्ययात्रा में विश्राम लिया जा सकता है, लेकिन अंतर्यात्रा, जो अध्यात्म और धर्म के उद्देश्य से की जाती है, जीवनभर निरंतर चलने वाली यात्रा है।

पूज्यवर ने अपने प्रवचन में नशामुक्ति के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि नशे का सेवन करने से चित्त भ्रमित हो सकता है, पापाचार की ओर झुकाव हो सकता है और व्यक्ति के वर्तमान जीवन और अगले जन्म में भी दुर्गति हो सकती है।

पूज्यवर ने कहा कि आजकल मोबाइल फोन भी एक प्रकार का नशा बन गया है। बच्चों में भी मोबाइल का अत्यधिक प्रभाव देखा जा रहा है। मोबाइल एक सीमा तक उपयोगी है तो उससे अधिक की स्थिति में सजा भी बन सकती है। इसका उपयोग केवल आवश्यकता और उपयोगिता के अनुसार होना चाहिए। आधुनिक यंत्रों का उजला पक्ष है तो उसका अंधेरा पक्ष भी है। डिजिटल डिटॉक्स के रूप में इनके अत्यधिक प्रयोग से बचने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों में विनय और संस्कार भी आने चाहिए। यह शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करता है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशामुक्ति के संकल्प करने और पुरुषार्थ के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा दी।

पूज्यवर के स्वागत में स्कूल के प्रिंसिपल और ट्रस्टी अश्विनभाई पटेल ने अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल, बड़ौदा ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विद्या, विनय और विवेक हैं सफलता के आधार : आचार्यश्री महाश्रमण

कंदारी।
11 दिसम्बर, 2024

अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ कंदारी के मानव केंद्र ज्ञान मंदिर में पधारे। ज्ञान सिंधु ने अपनी अमृतमयी देशना से ज्ञान का पीयूष पिलाते हुए कहा कि जो अविनीत और उद्दंड होता है, उसे विपत्ति मिलती है, जबकि जो विनीत, मृदु और विनयशील होता है, उसे संपत्ति की प्राप्ति होती है। विपत्ति और संपत्ति एक-दूसरे से विपरीत स्थितियां हैं।

अविनीत को विपत्ति क्यों मिलती है? इसका समाधान देते हुए उन्होंने कहा कि अविनीत और उद्दंड व्यक्ति की आत्मा कलुषित और अपवित्र हो जाती है। आत्मा की दृष्टि से इसका नुकसान भी विपत्ति ही है। व्यवहार की दृष्टि से देखें तो अविनीत व्यक्ति को कोई अपनाना नहीं चाहता। उसे मित्र, पुत्र या सहयोगी के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। हर स्थिति में उसे प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। दूसरी ओर, जो विनीत होता है, उसे सभी पसंद करते हैं।

उन्होंने बताया कि विद्यार्थी में विद्या के साथ-साथ विनय और विवेक का भाव होना चाहिए। जीवन के विकास में ये तीनों आवश्यक हैं। तभी वह जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। विद्या, विनय और विवेक के सुमंगल दीप जलाकर जीवन को सुफल बनाने का प्रयास करें। ज्ञान के विकास के लिए परिश्रम करना आवश्यक है। विद्यार्थी को पढ़ाई में लगन और अध्ययन के प्रति परिश्रमशील रहना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि विद्या से विनय प्राप्त होता है। विनय से व्यक्ति पात्र बनता है, और पात्रता के बाद धन, धर्म और सुख की प्राप्ति होती है। विनय से ज्ञान शोभित होता है। विनयशीलता जीवन का एक महान सद्गुण है। इसके साथ-साथ व्यक्ति में हित और अहित का विवेक भी होना चाहिए। विद्यार्थी हिंसा से दूर रहें और अपने मन में अहिंसा का भाव बनाए रखें।

पूज्य प्रवर का इस विद्यालय में गत वर्ष भी पधारना हुआ था। आज इस विद्यालय में पुनः आना हुआ। पूज्य प्रवर ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता

और नशामुक्ति की प्रतिज्ञाएँ समझाकर उन्हें संकल्प स्वीकार करवाए।

मानव केंद्र ज्ञान मंदिर के प्रिंसिपल महेंद्र सिंह ने पूज्य प्रवर का स्वागत करते हुए अपनी भावना अभिव्यक्त की। विद्यार्थियों ने आचार्यश्री के स्वागत में सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

कई चतुर्मास के बाद गुरुदर्शन करने वाली साध्वी पुण्यप्रभाजी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। पूज्य प्रवर ने साध्वियों को पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संघ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं श्रावक

फरीदाबाद।

समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी व डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी का फरीदाबाद में लगभग अठारह दिवसीय प्रवास संघ प्रभावक रहा। प्रातः कालीन प्रवचन व सायं अर्हत् वंदना आदि के नियमित कार्यक्रम चले। इसी दौरान महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया का भी यहां आगमन हुआ। महिला मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने आपका स्वागत किया। फरीदाबाद सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल बैद ने स्वागत करते हुए स्थानीय कार्यक्रमों की जानकारी दी।

महासभा अध्यक्ष सेठिया ने महासभा के उद्देश्यों को बताते हुए पारिवारिक सार संभाल पर विशेष बल दिया। भावी पीढ़ी को संस्कारी बनाने की बात कही।

डॉ. समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञाजी ने कहा- संघ कामधेनु, आम्रकुंज, शीतगृह तथा अनुपम है। इसमें तेरापंथ के आचार्यों, साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं का बलिदान बोल रहा है। संघ महान है, यहां आज्ञा व अनुशासन का विशेष महत्व है। संघ विकास में श्रावक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। सेठिया जी का महासभा अध्यक्ष के पद हेतु दूसरी बार चयन उनकी कार्यकुशलता का परिचायक है। आप, सहज, सरल व संपन्न व्यक्तित्व के धनी हैं।

समणी जी के सान्निध्य में विज्ञान-वरदान या अभिशाप, विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें दस प्रतिभागी रहे। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय आदि विजेताओं को महासभा अध्यक्ष द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रथम-कमल दूगड़ तथा द्वितीय मंजु लुणिया और नवीन छाजेड़ रहे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री नवीन छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष ललिता जैन ने कैंसर जागरुकता अभियान बैनर का अनावरण किया।

दो दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

बोरावड़। साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य व जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, बोरावड़ के तत्वावधान में वेदिका फार्म हाउस में 4 से 14 साल तक के बच्चों का शिविर आयोजित हुआ । प्रथम दिन साध्वी श्रीजी ने 'बाल संस्कार का महत्व' विषय पर अपना उद्बोधन दिया। सध्वी मौलिकयशाजी ने 'How to improve Memory' तथा 'Magical words' विषय पर कक्षा ली व कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। साध्वी भावितयशाजी ने 'अच्छा बच्चा कौन' तथा 'How to control Anger' विषय पर विचार रखें। रात्रि में सामान्य ज्ञान व साध्वीश्री के प्रवचन के पश्चात कहानी प्रतियोगिता भी रखी गई जिसमें प्रथम पर्व दुगड़, द्वितीय कुणाल बोथरा, एवं तृतीय प्रियांशु गेलडा व लक्ष्य गेलडा रहे। दूसरे दिन का प्रारंभ प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात प्रज्ञा लूनिया ने बच्चों को योगाभ्यास करवाया। साध्वीश्री ने 'व्यावहारिक ज्ञान का महत्व' विषय पर बहुत ही सरल भाषा में सूत्र की व्याख्या करते हुए उसे व्यवहार में उपयोगी बनाने की प्रेरणा दी। साध्वी मौलिकयशाजी ने प्रमोद भावना व 'Technology' का प्रभाव विषय में जानकारी दी व कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। साध्वी भावितयशाजी ने 'Personality Development' व सामान्य ज्ञान विषय में कक्षा ली। रात्रि में शनिवार की सामायिक के पश्चात् बच्चों ने शिविर के अनुभव सुनाए। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका सुनीता दुगड़ व भावना कोटेचा का विशेष श्रम रहा।

समय और श्रम का संयोजन करते हुए जीवन को बनाएं साधनामय

गोरेगांव।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी सप्त दिवसीय मालाड प्रवास के बाद सहवर्ती साध्वी वृंद के साथ गोरेगांव पहुंचीं। इस अवसर पर तेरापंथ सभा भवन में भव्य स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया। मालाड तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने मालाड तेरापंथ समाज की ओर से साध्वीश्री के प्रति आभार व्यक्त किया और उनकी आगामी विहार यात्रा की मंगलकामनाएं प्रेषित की। तेरापंथ सभा गोरेगांव के अध्यक्ष अशोक चौधरी और तेयुप अध्यक्ष सुमित चौरड़िया ने साध्वी वृंद का अभिनंदन करते हुए अधिकाधिक प्रवास की प्रार्थना की।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि कांदिवली चातुर्मास के दौरान मालाड, गोरेगांव और बोरिवली-दहिसर क्षेत्र में हर गतिविधि में समाज की सराहनीय सहभागिता रही। उन्होंने इस जागरूकता को बनाए रखने का आह्वान किया। साध्वीश्री ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें जिन शासन में साधना का अवसर मिला है। भिक्षु शासन को देखने का सौभाग्य और वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की पवित्र आभा में आनंद का अनुभव हो रहा है। संघ की गरिमा को बढ़ाने में हम सभी को सहयोगी बनना चाहिए। समय और श्रम का संयोजन करते हुए अपने जीवन को साधनामय बनाना आवश्यक है।

साध्वीश्री ने परिषद् को प्रेरित करते हुए कहा, हर घड़ी में कम से कम दो मिनट निकालकर सामायिक साधना अवश्य करनी चाहिए। कई श्रद्धालुओं ने सामायिक करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर साध्वी राजुलप्रभाजी ने मनुष्य जन्म की महत्ता को दर्शाते हुए एक मधुर गीत का संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने ध्यान का अभ्यास करवाकर उपस्थित जनसमुदाय को शांतिपूर्ण अनुभव प्रदान किया।

कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम WALKTHON का आयोजन

मदुरै। तेरापंथ महिला मंडल मदुरै द्वारा कैंसर अवेयरनेस रैली का आयोजन किया गया। रैली मंजनकारा स्ट्रीट से तेरापंथ भवन तक रखी गई। तेरापंथ भवन में डॉक्टर रविंद्र तोशीवाला द्वारा कैंसर के लक्षणों और बचाव पर जानकारी दी गई और बहनों की शंकाओं का समाधान किया गया। डॉ. रविन्द्र ने नियमित रूप से व्यायाम व प्राणायाम करने की प्रेरणा दी। गुटखा, पान, तम्बाकू के दुष्प्रभाव की जानकारी दी। अध्यक्ष लता कोठारी ने सबका स्वागत किया। रैली में महिला मंडल की बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुनीता कोठारी ने दी।

वीतरागता की भावना का हो उत्तरोत्तर विकास

नोखा।

अहंकार पतन की ओर ले जाता है। रूप, धन, ज्ञान, यौवन, बल का अभिमान हो सकता है। राजा रावण का पतन अहंकार से हुआ। व्यक्ति विनम्र बने, झुकना सीखे, परोपकार करे। दया और करुणा जिसके भीतर है, जो पाप से डरता है वह व्यक्ति धार्मिक है।

राग द्वेष अहंकार छोड़ें तब वीतरागता की और प्रस्थान संभव है। उपरोक्त उद्गार मुनि सुमति कुमार जी ने चांडक भवन उपस्थित धर्म सभा में व्यक्त किए। प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग कराते हुए मुनि देवार्य कुमार जी ने विवेक में धर्म बतलाया। मुनि श्री ने आगे कहा कि संयम पूर्वक खाना, बोलना, उठना, बैठना हो तो पापकारी प्रवृत्ति से वंचित रहा जा सकता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा उपाध्यक्ष लाभचंद छाजेड़ ने किया।

मुनि सुमति कुमार जी की संसारपक्षीय माता किरण देवी आंचलिया का 'श्राविका गौरव' सम्मान प्राप्त होने पर तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ सभा द्वारा साहित्य दुपट्टा भेंट कर किया गया। इंद्रचंद बैद, सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, युवक परिषद अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा ने अपने विचार रखे।

'लक्ष्य' कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

सुजानगढ़।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित लक्ष्य कार्यशाला 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया, तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रेरणा गीत द्वारा किया गया। सभी अतिथियों का स्वागत महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भूतोडिया द्वारा किया गया। साध्वी मनीषाश्रीजी ने अभातेममं की अध्यक्षा सरिता डागा से यह कहते हुए लक्ष्य कार्यशाला का आगाज किया कि आप आध्यात्मिक क्षेत्र की कार्यशालाएं भी आयोजित करें। लक्ष्य है ऊंचा हमारा गीतिका के साथ साध्वीश्री ने अपनी भावों की अभिव्यक्ति की। अतिथि के रूप में उपस्थित बालिका स्कूल की प्रिंसिपल सरोज पूनिया ने बड़े ही सहज और सरल भाव में लक्ष्य के बारे में समझाया।

राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा ने कहा कि आप भी अपने जीवन में कुछ ऐसे लक्ष्य निर्धारित करें जिससे आपका जीवन सफलता की और अग्रसर हो। नया साल आने वाला है तो आप कुछ ऐसा रेजोल्यूशन लें जिससे आपका एक गोल निर्धारित हो जाए। मुख्य वक्ता ओसवाल स्कूल के प्रिंसिपल सुकेश पचोरी, प्रतिपक्ष नेता जयश्री दाधीच, गोपालपुर सरपंच सविता राठी, सुजानगढ़ सभापति नीलोफर गोरी आदि ने जीवन में लक्ष्य के महत्व पर प्रकाश डाला।

अभातेममं की पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बैद ने कहा कि लक्ष्य का जीवन में ना होना हमारे जीवन को निरर्थक कर देता है। थली प्रभारी अलका बैद द्वारा मंडल की गतिविधियों के बारे में समझाया गया। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष सज्जन देवी बोकडिया द्वारा किया गया। सफल संयोजन महिला मंडल मंत्री डॉ. पूजा फूलफगर द्वारा किया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने प्रेरणाद स्वरूप उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम में लगभग 70 भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, अमराईवाड़ी ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका मंजू गेलड़ा द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई।

इसके पश्चात प्रेक्षाध्यान गीत का सामूहिक संगान हुआ। महिला मंडल की अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया।

तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद की अध्यक्ष एवं प्रेक्षा वाहिनी सदस्य हेमलता परमार ने ध्यान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए दैनिक जीवन में इसे अपनाने के सूत्र साझा किए।

उन्होंने प्रतिभागियों को ध्यान का अभ्यास करवाया और इसे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने की प्रेरणा दी। उपासिका मंजू गेलड़ा ने प्रेक्षा ध्यान की उपयोगिता पर चर्चा की और अनुप्रेक्षा का अभ्यास करवाया। तेरापंथ सभा की सह मंत्री लाड बाफना ने प्रेक्षा ध्यान के महत्व को सरल शब्दों में समझाया और मंगल भावना व्यक्त की।

श्रेया पगारिया ने कविता के माध्यम से भावनाओं को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम में कुल 22 बहनों ने सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री वंदना पगारिया द्वारा किया गया, जबकि आभार ज्ञापन कोमल हिरण ने किया।

पैंसठिया छंद एवं यंत्र सिद्धि अनुष्ठान

गुड़गांव।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में गुड़गांव सेक्टर चार के शांतिनाथ जैन मंदिर के पावन परिसर में सभा के तत्वावधान में पैंसठिया छंद एवं यंत्र सिद्धि अनुष्ठान का भव्य आयोजन हुआ। सैंकड़ों श्रावक एवं श्राविकाओं ने इस अनुष्ठान में भाग लेकर नई ऊर्जा का अनुभव किया। साध्वी श्री ने अनुष्ठान कराते हुए कहा- आज व्यक्ति भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने के लिए भाग दौड़ करते हुए, भौतिकता की अंधियारी गलियों के भटकते हुए, मानव को अध्यात्म का प्रकाश चाहिए। अपेक्षा है हम अपने जीवन में अध्यात्म का सूरज उगाएं। जीवन की महफिल में आनंद के दीप जलाएं। साध्वी श्री ने कहा- जीवन को आलोकित करने के लिए प्राणऊर्जा की आवश्यकता है। प्राणऊर्जा संवर्धन का महत्वपूर्ण साधन है- जप अनुष्ठान। पैंसठिया छंद जैन परम्परा का सर्वमान्य छंद है। चौबीस तीर्थंकरों की विशेष स्तुति वाला यह छंद विघ्न-बाधा निवारक है। दुःख दारिद्र्य को दूर करने वाला श्री वरदाई छंद है। दौर्भाग्य नाशक एवं सौभाग्य वर्धक है। आरोग्य प्रदायी संजीवनी वटी तुल्य है। जो व्यक्ति इस यंत्र को अपने पास रखता है एवं इस छंद का प्रतिदिन पठन करता है उसको कभी दुःख का मुंह देखना नहीं पड़ता। अनुष्ठान की साधना करने वाले साधक प्रतिदिन पैंसठिया छंद पढ़े एवं अपने जीवन को आनंदमय बनाए। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंगल संगान किया एवं अनुष्ठान में उत्तर साधक की भूमिका का निर्वहन किया।

सभाध्यक्ष विनोद जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। अशोक सुराणा एवं गुड़गाँव महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष रूबी बाफना ने पूरे समाज की ओर से साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मंच संचालन साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

जैन विद्या परीक्षा का आयोजन

भांयदर मुंबई। समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत जैन विद्या परीक्षा 2024 का आयोजन तुलसी समवसरण तेरापंथ भवन भायंदर पश्चिम में साध्वी पुण्ययशाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में हुआ। परीक्षा का प्रारंभ साध्वीश्री के मंगल पाठ से हुआ। भाग 8 व 9 के परीक्षा पेपर केन्द्रीय निरीक्षक सभा मंत्री रुपसिंह गोठी, तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य निर्मल जैन, महिला मंडल अध्यक्षा उर्मिला हिंगड़, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष सुनिल डांगी, केंद्र व्यवस्थापक पारस कच्छारा सह केंद्र व्यवस्थापिका लीला कच्छारा, शान्ति कोचर के समक्ष लिफाफा खोला गया। ऑनलाइन व ऑफलाइन कुल 64 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी ।

सम्मान व्रत चेतना का एवं बारहव्रत स्वीकरण कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

साध्वी उदितयशाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा आयोजित सम्मान व्रत चेतना का एवं बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का आगाज साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित 'श्रावक व्रत धारो' गीतिका की प्रस्तुति से किया। साध्वी उदितयशाजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि श्रावक के जीवन मे सूर्योदय तो रोज़ होता हे लेकिन अब हमें व्रत के सूर्य का उदय करना है, जिससे हम तीनों लोक के स्वामी अर्थात 'अकिंचन' बन सकें। व्रत अर्थात सीमा या त्याग के आवरण में अपने आपको घेरना। अव्रत हर समस्या का जागरण है। सब कुछ पाने की लालसा होती है। व्यक्ति परिग्रह से बंधे होने के कारण व्रत धारण नहीं कर पाता।

व्रत धारण करना अपनी आत्मा की सुरक्षा का आवरण बनाना होता हैं, श्रावक व्रत की आराधना करने से हम अपना स्थान वैमानिक देव लोक में जमा सकते है। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए बारह व्रत दीक्षा स्वीकार करने का आह्वान किया एवं अभातेयुप द्वारा निर्देशित सम्मान व्रत चेतना का उपक्रम में अब तक जिन्होंने भी बारह व्रत स्वीकार किया हुआ उन सबका साध्वीश्री के सानिध्य में जैन पट्ट एवं सम्मान पत्र से सम्मान किया। राजाजीनगर क्षेत्र में 21 बारहव्रती श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान किया गया। मंच संचालन तेयुप मंत्री जयंतीलाल गाँधी ने किया।

भाग्योदय का विज्ञान : स्वर विज्ञान

रायपुर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में इंदर चंद बिमला देवी पारख परिवार द्वारा विशेष कार्यशाला का आयोजन 'भाग्योदय का अद्भुत विज्ञान : स्वर विज्ञान' विषय आधारित रायपुर के यूफोरिया अपार्टमेंट, मोवा में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से रायपुर के सांसद बृजमोहन अग्रवाल सपत्नीक उपस्थित हुए। मुनि सुधाकर जी ने उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि स्वर विज्ञान प्राचीन शास्त्रों में उल्लेखित है। स्वर विज्ञान हमारी श्वास से संबंधित है, हम जो श्वास लेते व छोड़ते हैं उसका भी अपना अद्भुत व महत्वपूर्ण विज्ञान है परंतु हमें यह भी विशेष रूप से जान लेना चाहिए कि यह अत्यन्त गोपनीय विज्ञान है संभवतः इसका क्रमबद्ध विवेचन हमें कही भी प्राप्त नहीं होता।

मुनिश्री ने आगे बताया कि हमारे शरीर में अनेक नाड़ियां है उसमें भी तीन अति महत्वपूर्ण है जो कि हमारी श्वास से संबंधित है। श्वास दो तरह की होती है- चंद्र व सूर्य। मुनिश्री ने मार्गदर्शित करते हुए बताया कि स्वर विज्ञान में वार का भी अपना महत्व है जैसे सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार को चंद्र स्वर व मंगलवार, शनिवार व रविवार को सूर्य स्वर में हमें कोई भी कार्य का प्रारंभ करना चाहिए जिससे हमें लाभ होगा।

मुनिश्री ने स्वर विज्ञान को समझने के कई प्रयोग भी उपस्थित जनता को करवाते हुए उन्हें पहचानने के उपाय बताए। मुनिश्री ने कहा कि श्वास भर कर कोई भी कार्य प्रारंभ करना चाहिए न कि निकालते हुए।

स्वर विज्ञान के ज्ञान से हम अनेक व्याधियों का उपचार करते हुए सुख सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं। मुनिश्री ने कहा कि श्वास का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि कि श्वास है तब तक ही आश है। मुनि नरेश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

विशेष अतिथि बृजमोहन अग्रवाल ने कि जिस दौर में बच्चे मोबाईल, महिलाएं टीवी सीरियल, युवा लैपटॉप व प्रौढ़ चिंता में व्यस्त हैं उस दौर में मुनिश्री ने रायपुर की धर्म धरा में चार माह जो धर्म की गंगा बहाई है वह अनुमोदनीय है। उन्होंने ने मुनिश्री के संयम जीवन के आध्यात्मिक प्रगति की मंगलकामना की।

'शांति एवं शक्ति की ओर' प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

इचलकरंजी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में प्रेक्षा कल्याण वर्ष के तहत इचलकरंजी तेरापंथ महिला मंडल ने 'शांति एवं शक्ति की ओर' विषय पर प्रथम प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में किया।

साध्वी कंचनप्रभाजी ने उपसंपदा का संकल्प करवाते हुए अपने उद्बोधन में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी और गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि प्रेक्षाध्यान जीवन में उपयोगी हो सकता है और इसे अपनाकर श्रावक समाज लाभान्वित हो सकता है।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा प्रेक्षागीत से मंगलाचरण के साथ हुई। साध्वी चेलनाश्रीजी ने उपसंपदा की विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए इसका महत्व समझाया। साध्वी निर्भयप्रभाजी ने नवकार महामंत्र के माध्यम से दीर्घ श्वास प्रेक्षा का अभ्यास करवाया और बताया कि इस ध्यान से कषाय को नियंत्रित किया जा सकता है। साध्वी उदितप्रभाजी ने कायोत्सर्ग का आध्यात्मिक विश्लेषण प्रस्तुत किया और पांच मिनट का प्रायोगिक अभ्यास करवाया।

साध्वी मंजूरेखाजी ने प्रेक्षाध्यान का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताया कि अंतर्यात्रा के माध्यम से ध्यान तक पहुंचा जा सकता है। उन्होंने नाड़ी और ग्रंथि तंत्र के संतुलन को ध्यान के लिए आवश्यक बताया। कार्यशाला में लगभग 60 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर लाभ उठाया। कार्यक्रम का समापन महिला मंडल की अध्यक्ष शिल्पा बाफना द्वारा आभार ज्ञापन के साथ हुआ।

संगठन का मूल आधार है अध्यात्म

राजाजीनगर।

साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में जुगराज श्रीश्रीमाल के निवास स्थान पर कर्तव्य बोध कार्यशाला का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

तेरापंथ सभा ट्रस्ट अध्यक्ष अशोक चौधरी ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पुस्तक 'कर्तव्य बोध' का उल्लेख करते हुए साध्वी उदियशाजी ने कहा कि संगठन का मूल आधार अध्यात्म होना चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ गौण कर, संघ का काम हो, संघ का नाम हो, इसी भावना को सर्वोपरि रखकर अहंकार को त्याग कर, सबको साथ लेकर चलने और सम्मान देने की भावना होनी चाहिए। जिज्ञासा सत्र में साध्वीश्री जी ने कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कार्यशाला में सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यशाला का कुशल संचालन महिला मंडल मंत्री लता नौलखा ने किया, महिला मंडल सहमंत्री सरिता संचेती ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पधारे हुए सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित प्रेक्षा कल्याण वर्ष में प्रथम प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षा गीत के संगान से हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने अपने वक्तव्य से सभी का स्वागत किया। संयोजिका बबीता पटवा ने कुशल संचालन करते हुए दीर्घ श्वास प्रेक्षा का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप बताया और फिर प्रयोग करवाया। जया घीया ने प्रेक्षा ध्यान का अर्थ, इतिहास एवं जीवन शैली से अवगत करवाया। इंदु डागा ने प्रेक्षा ध्यान के मुख्य बिंदु कायोत्सर्ग पर अपने विचार रखे व कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया।

कार्यक्रम संयोजिका कांता बच्छावत ने प्रेक्षा चर्या के पांच सूत्रों के बारे में बताया व सभी बहनों को प्रेक्षा वाहिनी से जुड़ने और यथासंभव सभी बहनों को घर पर प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करने का संकल्प करवाया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। इस आशय की जानकारी प्रचार प्रसार मंत्री विनीता सुराणा ने दी।

संक्षिप्त खबर

कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन

कोयम्बतूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयम्बतूर ने कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम, वॉकथॉन एवं टॉक शो का आयोजन किया। प्रथम चरण में वॉकथॉन का आयोजन किया। दूसरे चरण में तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यशाला की शुरुआत मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण व प्रेरणा गीत द्वारा की गई। तत्पश्चात अध्यक्ष मंजू सेठिया ने मुख्य वक्ता डॉ. रश्मि व सभी बहनों का स्वागत व अभिनंदन किया। डॉ रश्मि ने कैंसर के लक्षण व उपचारों के बारे में बताया और कहा कि इस रोग की शुरुआत में पहचान से अधिक सफल इलाज हो सकता है। डॉक्टर ने बताया कि संतुलित आहार लेना व स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना चाहिए। 24 घंटे में कम से कम 2 घंटे अपने लिए जरूर निकालें, जिसमें योग, प्राणायाम, आसन आदि करने चाहिए। प्लास्टिक व अल्युमिनियम का कम से कम उपयोग करें। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका बुच्चा ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **बेंगलुरु।** सरदारशहर निवासी एवं बेंगलुरु प्रवासी भारती-शुभकरण डागा की पौत्री एवं शैली-पीयूष डागा की पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया।

■ **बेंगलुरु।** हनुमान बाफना के पौत्र एवं अभिमन्यु बाफना के नवजात शिशु का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** गंगाशहर निवासी दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी वैभव-निकिता पटवा, ऋषभ-राजश्री पटवा, सौरभ पटवा (सुपुत्र अनिल-सुनीता पटवा) का विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व अशोक सिंघी ने सानन्द संपादित करवाया।

■ **गाँधीनगर दिल्ली।** लाडनूँ निवासी दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी प्रदीप अनिता भूतोड़िया का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा व प्रकाश सुराणा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **डोम्बिवली।** भगवतीलाल भंवरलाल कच्छारा के नवीन प्रतिष्ठान HAVELLS GALLERY का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक भगवतीलाल सोनी, राजकुमार हीरावत, विनोद सिंघवी, सुरेश बैद, संजय खाब्या, राजेश चौधरी, ललित पुनमिया, प्रवीण धिंग, प्रमोद इंटोदिया, विपिन मेहता, प्रियांशु रांका ने अपनी भूमिका का निर्वहन कर निर्दिष्ट विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न कराया।

जागने का अर्थ है स्वयं को जानना

वीरगंज, नेपाल।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि रमेश कुमार जी का श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा वीरगंज के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में स्वागत कार्यक्रम का आयोजित हुआ। स्वागत कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- संत जागृति का संदेश देते हैं, जागने के अर्थ को सम्यक् तरीके से सिखाते हैं।

जागने के महत्व को समझें। व्यक्ति प्रातःकाल अंगड़ाई लेते हुए जागता है। उसे लगता है कि मैं जागा हुआ हूं, पर तथ्य यह है कि वह जागा हुआ नहीं है। उसका यह भ्रम आजीवन उसे दौड़ाया करता है। कोई धनार्जन की भूमिका बनाता रहता है। कोई लोकेषणा की पूर्ति में खोखला प्रदर्शन करता रहता है। इससे इतर कुछ पद, प्रतिष्ठा की दौड़ में ही लगे रहते हैं, कुछ प्रपंच में पूरा जीवन बिता देते हैं।

कोई दूसरे की प्रगति देखकर ईर्ष्या से जल-भुन जाता है। आपने आगे कहा- वास्तव में ये सभी क्रियाएं नींद की पर्याय हैं। अधिकांश व्यक्ति सोए हुए हैं। सुविधाओं की लंबी सूची बनाकर उनकी पूर्ति में पूरा जीवन खपा देते हैं। इस जागृत स्वप्न से उबरने के लिए बाहर की नहीं भीतर की यात्रा अपेक्षित है।

जागता वह है जो वैराग्य का मुखापेक्षी होता है। मुनि रत्न कुमार जी ने सभी को संतों के प्रवास का अधिक से अधिक लाभ लेने की प्रेरणा दी।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने महाप्रज्ञ अष्टकम से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष दिलिप कोठारी ने पूरे समाज की ओर संतों का स्वागत करते हुए अधिक से अधिक वीरगंज प्रवास का निवेदन किया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा बबीता खटेड, तेयुप अध्यक्ष लोकेश जम्मड, महासभा के का.स. निर्मल कुमार सिंघी आदि अनेक वक्ताओं ने संतों के स्वागत कार्यक्रम में अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर से स्वागत किया।

हर्षिका भंसाली ने कविता के माध्यम से संतों का स्वागत किया। तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक स्वागत गीत का संगान किया।

शांति एवम् शक्ति की ओर कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा मुनि यशवंत कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष अंतर्गत प्रेक्षा प्रवाह-शांति एवं शक्ति की ओर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि मुनि यशवंत कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत से मंगलाचरण किया गया। नीतू सालेचा ने कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया।

उपासिका मोहिनी देवी सकलेचा ने समताल प्रेक्षा और दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए। पुष्पा देवी बुरड़ ने अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाते हुए कहा कि इससे मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य का सुधार होता है, चित्त में समाधि का अनुभव होता है।

मुनि यशवंत कुमार जी ने सभी बहनों को प्रेक्षा वाहिनी से जुड़ने और यथासंभव सभी बहनों को घर पर भी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करने के संकल्प करवाए। अध्यक्ष कंचन देवी ढ़ेलडिया ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया व आभार ज्ञापन ममता मेहता ने किया। बहनों की उपस्थिति अच्छी रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

संक्षिप्त खबर

'जीवन विज्ञान की आवश्यकता' विषय पर कार्यशाला

इचलकरंजी। अणुविभा के निर्देशानुसार त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान समारोह के अंतर्गत इचलकरंजी अणुव्रत समिति ने विवेकानंद गर्ल्स हाई स्कूल में 'शिक्षा जगत में जीवन विज्ञान की आवश्यकता' विषय पर कार्यशाला रखी। स्कूल ने अपने प्रांगण में कक्षा 1 से 9 की छात्राओं की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य प्रशिक्षक विकास सुराणा ने विषय के बारे में संपूर्ण जानकारी दी और स्कूल को आह्वान किया कि जीवन विज्ञान का नित्य प्रशिक्षण व प्रयोग का स्कूल के पाठ्यक्रम में समावेश करे। उसके पश्चात श्वास के प्रयोग, महाप्राण ध्वनि का प्रयोग, ज्ञान केंद्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। कार्यशाला में स्कूल की मुख्याध्यापिका, शिक्षक गण, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा सुनीता गिडिया, निर्वतमान अध्यक्ष पंकज जैन, सचिव संतोष भंसाली और अन्य कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली, (मुंबई)। प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा वाहिनी एवं प्रेक्षा ध्यान योग साधना केंद्र कांदिवली द्वारा, भगवान महावीर की साधना एवं कायोत्सर्ग प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन प्रियदर्शनी इंदिरा गांधी गार्डन अशोक नगर कांदिवली मुंबई में किया गया। आचार्य तुलसी द्वारा रचित प्रेक्षा गीत का संगान प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं द्वारा सामूहिक रूप से किया गया। त्रिपदी वंदना इलाबेन के द्वारा, मंगल भावना एवं नमस्कार मुद्राएं कविता देवरानी के द्वारा प्रस्तुत की गई। वक्तव्य एवं वृहद् कायोत्सर्ग वरिष्ठ मुख्य प्रशिक्षक पारसमल दूगड़ के निर्देशन में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 25 संभागियों की उपस्थिति रही।

जैन विद्या की परीक्षा आयोजित

मदुरै। जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के अंतर्गत जैन विद्या परीक्षा का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मदुरै तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ। केंद्रीय व्यवस्थापक नेहा दुधेड़िया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतम चंद गोलेछा एवं मंत्री अभिषेक कोठारी ने सभी के समक्ष प्रश्न पत्र का लिफाफा खोला।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

उत्तर-कोलकाता। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर-कोलकाता द्वारा आरडीबी ग्रुप के स्टेम वर्ल्ड स्कूल में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 48 लोगों की निःशुल्क नेत्र जांच की गई। शिविर में तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अंतर्गत प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षा वाहिनी द्वारा ओसवाल भवन दिल्ली में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रेक्षा प्रशिक्षिका सविता जैन द्वारा प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी गई। प्रशिक्षक विमल गुनैचा एवं निर्मला बोथरा के उपस्थिति में प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला आयोजित की गई। प्रेक्षावाहिनी विवेक विहार की संवाहिका चंद्रकला लूनिया ने मंगलभावना का उच्चारण करवाया। प्रेक्षा गीत का संगान सामूहिक रूप से किया गया। कार्यशाला में 23 सहभागियों की उपस्थिति रही।

भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिवस

जागरुकता के अभाव में कहीं व्यर्थ न हो जाए सम्यक्त्व का खजाना

मालाड़ (मुंबई)।

तेरापंथ भवन में समायोजित भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक कार्यक्रम में उपस्थित धर्म परिषद को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा - जीवन में जन्मदिन से बड़ा दीक्षा दिवस होता है, क्योंकि धरती पर जन्म लेने वाले सभी होते हैं पर गृहस्थ जीवन को छोड़ कर संयम-पथ स्वीकार करने वाले विरले होते हैं। भगवान महावीर का जीवन प्रारंभ से ही करुणा, समता, वैराग्य से परिपूर्ण रहा। महान गुणों के अवधारक महावीर ने राग से वैराग्य-पथ पर चरणन्यास किया। शरण में आए शरणार्थियों का उद्धार किया, आत्म कल्याण का मार्ग दिखाया।

साध्वीश्री ने आगे कहा - आज का दिन प्रेरणा देता है कि हर श्रावक ऐसी साधना करे जिससे उसके सम्यक्त्व की स्थिरता बनी रहे। अपने सम्यकत्व की सुरक्षा का प्रयास करें। सम्यक्त्व एक महत्त्वपूर्ण खजाना है, वह जागरुकता के अभाव में कहीं व्यर्थ न चला जाए। सभी मोक्ष में जा सकते हैं, इस बात को न भूलें। भगवान महावीर के बारे में ज्यादा भले ही न कहें, महावीर ने जो कहा है- उसे अपने जीवन व्यवहार में अपनाएं। अनेकान्त, अहिंसा, अपरिग्रह की चेतना का ऊर्ध्वारोहण हो। साध्वी अतुलयशा जी ने कहा - भगवान महावीर का जीवन आदर्श है उन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिए साधुत्व स्वीकार करके महान सूत्र दिए हैं। साध्वी सुदर्शनाप्रभाजी, साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'महावीर हॉस्पिटल' कार्यक्रम की मोहक प्रस्तुति दी और 'जिनशासन का सुंदर उपवन' गीत का सामूहिक संगान किया।

तेयुप द्वारा सामूहिक महावीर अभ्यर्थना से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा मालाड के मंत्री सुरेश धोका, तेयुप अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा, बैंगलौर से समागत राजेश कोठारी ने श्रद्धासिक्त विचार प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल मालाड की बहनों ने श्रद्धा स्वर प्रस्तुत किए।

साध्वी राजुलप्रभा जी और साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने आज से ग्यारह वर्ष पूर्व, तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर बीदासर वृहद् दीक्षा समारोह में आचार्य श्री महाश्रमण जी के श्रीमुख से श्रेणी आरोहण के प्रसंग को याद करते हुए दीक्षा प्रदाता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

पंच सूत्रों से परिवार को बनाए स्वर्ग से सुन्दर

राजाजीनगर।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में संयुक्त रूप से सभा, महिला मंडल एवं तेयुप राजाजीनगर द्वारा 'अध्यात्म के रंग - परिवार के संग' कार्यशाला तेरापंथ भवन में समायोजित की गई।

साध्वीश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वी उदितयशाजी ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पंचसूत्रम ग्रंथ का उल्लेख करते हुए बताया कि अनुशासन, व्यवस्था, आज्ञा, आलंबन और शांत सहवास इन पांच नियमों की अनुपालना से परिवार स्वर्ग से सुंदर बन सकता है।

हर परिवार को अपना संविधान और हाजरी पत्र बनाना चाहिए जिससे परिवार के हर सदस्य की मौलिक मर्यादा तय हो सके।

इससे आध्यात्मिक गुणों का विकास और खुशहाल परिवार का सपना साकार होता है। साध्वी भव्ययशाजी ने गीतिका का संगान कर कहानी के माध्यम से परिवार के लिए सहनशीलता होना बहुत जरूरी बताया।

जिज्ञासा समाधान सत्र में साध्वी श्री ने श्रावकों के प्रश्नों का बहुत ही सरल शैली में संतोषप्रद जवाब दिए। कार्यशाला में श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

कुशल मंच संचालन सतीश पोरवाड़ ने और आभार ज्ञापन कमलेश चौरडिया ने किया।

साध्वी वृंद का हुआ आध्यात्मिक मिलन

कांदिवली, मुंबई।

साध्वी राकेशकुमारी जी और साध्वी शकुंतलाश्री जी का कांदिवली, मुंबई में आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा - सौभाग्य से हमने तेरापंथ जैसा वट वृक्ष पाया है।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में धर्म एवं अध्यात्म के नए-नए कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। साध्वी शकुंतलाश्रीजी विलेपार्ले का चातुर्मास संपन्न कर कांदिवली पधारी हैं 1 साध्वी शकुंतलाश्री जी की विवेक चेतना और विनय चेतना जन-जन को प्रभावित करने वाली है।

सभी साध्वियों के प्रति मंगल कामना व्यक्त करते हैं। हम आपका स्वागत करके आनंदित है। साध्वी शकुंतला श्री जी ने कहा - साध्वी राकेश कुमारी जी माधुर्य गुण संपन्न एवं अनुभवी विशिष्ट साध्वी है।

इनकी प्रवचन शैली बेजोड़ है, चिंतनशील एवं धर्म संघ की कार्य योजना को प्रभावित बनाने वाली विशिष्ट साध्वी हैं। साध्वी मलयविभा ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

दोनों सिंघाड़ों की साध्वियों ने गीत की प्रस्तुति दी। मंगलाचरण भारती सेठिया ने किया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ के अनुसार वात्सल्य भावना से ओत-प्रोत मिलन का नजारा जन-जन को प्रभावित कर रहा था।

मंत्री प्यारचंद मेहता ने स्वागत किया। पूरे श्रावक समाज की सराहनीय सहभागिता रही।

नव वर्ष पर चौबीसी कंठस्थ की प्रेरणा

तेरापंथ टाइम्स पढ़ते हुए लोकसभा अध्यक्ष

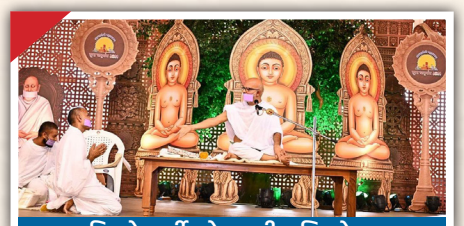
मुख्य मुनि को कुर्सी को बक्शीश दिराते पूज्य प्रवर

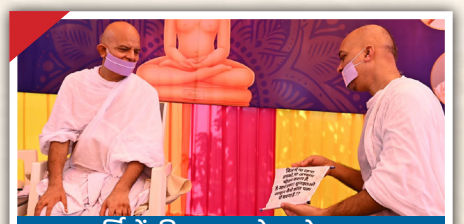
ज्ञानार्थियों की भावना को पढ़ते पूज्य प्रवर

स्वयं की दीक्षा का आज्ञा पत्र पढ़ते पूज्य प्रवर

वारकरी संप्रदाय द्वारा 'धर्म दिवाकर' सम्मान

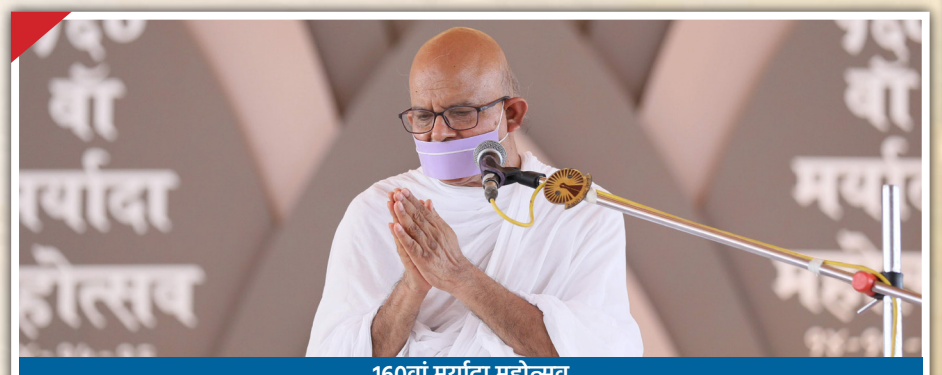
160वां मर्यादा महोत्सव

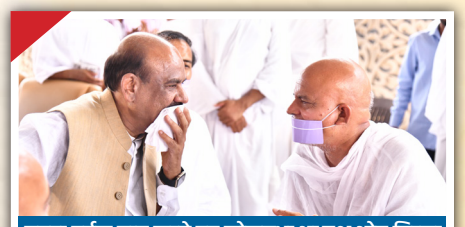
यतना पूर्वक बात करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला

सूरत से भुज को हुआ दायित्व हस्तांतरण

पूज्य सन्निधि में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

मुंबई के लोकल रेलवे स्टेशन से विहार रत आचार्य प्रवर

2024 एक नजर

मर्यादा महोत्सव, वाशी का दृश्य

गुरु आज्ञा से नोखा में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती द्वारा दीक्षा संस्कार

जैन विश्व भारती का दीक्षांत समारोह

आचार्य प्रवर के साथ बौद्ध धर्मगुरु राहुलबोधि जी

तेरापंथ विश्व भारती का उदयोत्सव

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी एवं साध्वी अणिमाश्री जी

ध्यान मुद्रा में गुरु शिष्य

महाराष्ट्र स्तरीय मंगल भावना समारोह

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करते रतन टाटा

आचार्य श्री की सन्निधि में उपप्रवर्तक डॉ. राममुनिजी

आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव

महाराष्ट्र में आचार्यप्रवर

अणुव्रत यात्रा समापन पर शिवराज पाटिल

पूज्य सन्निधि में ब्रह्म कुमार निकुंज भाई

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

सन् 2025

January

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

February

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

March

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

April

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

May

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

June

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

July

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

August

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

September

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

October

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

November

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

December

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

विघन हरण अशरण शरण,
शिवसुख करण प्रणाम।
ज्योतिचरण तारणतरण,
भज मन भिक्खू स्याम।।

300
आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष

सन् 2025 के विशेष पर्व

जनवरी

01 जनवरी	अंग्रेजी नव वर्ष
13 जनवरी	पक्खी
14 जनवरी	मकर सक्रांति
26 जनवरी	76वां गणतंत्र दिवस
28 जनवरी	पक्खी

फरवरी

02 फरवरी	वसंत पंचमी
04 फरवरी	161वां मर्यादा महोत्सव
12 फरवरी	पक्खी
27 फरवरी	पक्खी

मार्च

13 मार्च	होलिका
14 मार्च	धुलेटी, चातुर्मास पक्खी
22 मार्च	वर्षीतप प्रारंभ दिवस
29 मार्च	पक्खी
30 मार्च	वि. सं. 2082 प्रारंभ

अप्रैल

06 अप्रैल	266वां भिश्रु अभिनिष्क्रमण दिवस, राम नवमी
10 अप्रैल	2624वां भगवान महावीर जन्म कल्याणक
12 अप्रैल	पक्खी
24 अप्रैल	16वां आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस
27 अप्रैल	पक्खी
30 अप्रैल	अक्षय तृतीया

मई

06 मई	64वां आचार्य महाश्रमण जन्मदिवस
07 मई	भगवान महावीर केवलज्ञान कल्याणक, 16वां आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक दिवस
11 मई	52वां आचार्य महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
12 मई	पक्खी
26 मई	पक्खी

जून

10 जून	पक्खी
14 जून	29वां आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस
23 जून	106वां आचार्य महाप्रज्ञ जन्मदिवस
25 जून	पक्खी

जुलाई

08 जुलाई	300वां आचार्य भिक्षु जन्म दिवस, 268वां बोधि दिवस
09 जुलाई	चातुर्मासिक पक्खी
10 जुलाई	266वां तेरापंथ स्थापना दिवस
24 जुलाई	पक्खी

अगस्त

08 अगस्त	पक्खी
09 अगस्त	रक्षा बंधन
15 अगस्त	79वां स्वतंत्रता दिवस
20 अगस्त	145वां श्रीमद् जयाचार्य महाप्रयाण दिवस, पर्युषण प्रारंभ
22 अगस्त	पर्युषण पक्खी
27 अगस्त	भगवती संवत्सरी महापर्व, गणेश चतुर्थी
29 अगस्त	90वां आचार्य कालूगणी महाप्रयाण दिवस

सितंबर

01 सितंबर	32वां विकास महोत्सव
05 सितंबर	223वां आचार्य भिक्षु चरमोत्सव
06 सितंबर	पक्खी
21 सितंबर	पक्खी
22 सितंबर	नवरात्रि प्रारंभ

अक्टूबर

02 अक्टूबर	गांधी जयंती, दशहरा
06 अक्टूबर	पक्खी
20 अक्टूबर	दीपावली
21 अक्टूबर	2552वां भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, पक्खी
23 अक्टूबर	112वां आचार्य श्री तुलसी जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)

नवंबर

05 नवंबर	चातुर्मासिक पक्खी
14 नवंबर	2595वां भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक
20 नवंबर	पक्खी

दिसंबर

04 दिसंबर	पक्खी
14 दिसंबर	भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
19 दिसंबर	पक्खी

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार की ओर से सभी पाठकों को अंग्रेजी नववर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

आचार्य प्रवर की सन्निधि में राज्यपाल आचार्य देव व्रत

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, सूरत से मंगल विहार

पूज्य प्रवर से वार्तालाप करते श्री श्री रविशंकर

पूज्य चरण में गुजरात के मुख्य मंत्री एवं गृह मंत्री

चातुर्मासिक प्रवेश से पूर्व आचार्य प्रवर एवं रत्नाधिक मुनिप्रवर

क्षमापना दिवस का दृश्य

जैन विश्व भारती का दीक्षांत समारोह

आचार्य श्री के साथ आचार्य मणिप्रभ सागर जी

आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव

पूज्य सन्निधि में संबित पात्रा

पिंपरी चिंचवड़ में 'जैनम जयतु शासनम्' कार्यक्रम

तेरापंथ टाइम्स का निरीक्षण करते पूज्य प्रवर

संसार पक्षीय भाइयों के साथ पूज्य श्री

2024 एक नजर

मूर्तिपूजक संप्रदाय के धर्माचार्यों के साथ आचार्य प्रवर

अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम में अणुव्रत गीत का संगान करते अणुव्रत अनुशास्ता

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत

दीपावली का मंगल पाठ

स्वामी नारायण संप्रदाय के संत पूज्य सन्निधि में

कार्यक्रम के मध्य पहुंचे स्थानकवासी सम्प्रदाय के मुनि जयेशचंद्र जी

श्रीचरणों में अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधीश दलवीर भंडारी

आचार्यप्रवर के सानिध्य में दीक्षा समारोह

आनंद प्रदायक गुरु सन्निधि के क्षण

आचार्य प्रवर के साथ आचार्य विजयरत्नसूरीश्वरजी

आचार्य शिवमुनिजी से आत्मीय मिलन

तेरापंथ टाइम्स की ओर से नव वर्ष की मंगल कामना

जीवन की दशा और दिशा बदलने में सक्षम है जीवन विज्ञान

ऑनलाइन।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को मनाये जाने वाले 'महाप्रज्ञ' अलंकरण जीवन विज्ञान दिवस समारोह के त्रिदिवसीय कार्यक्रमों का शुभारम्भ अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रतापसिंह दूगड़ की अध्यक्षता में ऑनलाइन आयोजित हुआ। इस अवसर पर अपने स्वागत वक्तव्य में आपने कहा कि जीवन विज्ञान एक ऐसा विषय है जिससे व्यक्ति का स्वयं का जीवन तो श्रेष्ठ बनता ही है साथ ही वह दूसरों के लिए भी प्रेरणादायी होता है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत जीवन विज्ञान बालकों के जीवन की दिशा और दशा को बदलने में सक्षम है। उन्होंने जीवन विज्ञान के प्रचार-प्रसार और संवर्द्धन में अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए इसमें और अधिक गुणवत्ता एवं गति लाने का आह्वान किया।

जीवन विज्ञान के मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ ने जूम के माध्यम से उपस्थित देशभर के अनेकों विद्यालयों के संचालक, प्राचार्य एवं शिक्षकों तथा जीवन विज्ञान के प्रशिक्षक, कार्यकर्ताओं को जीवन विज्ञान दिवस की बधाई देते हुए कहा कि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने मुनि नथमल को अज्ञ से विज्ञ और विज्ञ से महाप्रज्ञ बनाया तो आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान आयाम के माध्यम से स्वस्थ समाज की संरचना करने वाले अनेक अवदान प्रदत्त कर मानव को एक संतुलित व्यक्तित्व बनने की राह बतलाई।

जीवन विज्ञान ऐसा विषय है जो बालक का शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर संतुलित विकास कर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारे वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा जीवन विज्ञान को आगे बढ़ाने की दिशा में हमें निरन्तर ऊर्जा, पाथेय और प्रोत्साहन प्राप्त होता रहता है। देश के अनेक विद्यालयों से जुड़े विद्यालय संचालक, प्राचार्य, शिक्षकों आदि ने अपने विचारों में जीवन विज्ञान विषय को विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक बताते हुए अपने विद्यालयों में इसे प्रारम्भ करने की भावना व्यक्त की। जीवन विज्ञान विभाग के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने आश्वस्त किया की जल्द से जल्द इस कार्य को गति प्रदान की जाएगी।

कार्यक्रम के अन्त में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के नवमनोनीत महामंत्री मनोज सिंघवी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा - प्रसन्नता है कि हमारे कार्यकाल का शुभारम्भ जीवन विज्ञान दिवस समारोह से हो रहा है।

कार्यक्रम का प्रारम्भ हनुमान मल शर्मा द्वारा अणुव्रत गीत के साथ मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. हंसा संचेती ने किया। जीवन विज्ञान दिवस समारोह 2024 हेतु मनोनीत राष्ट्रीय संयोजिका पुष्पलता पींचा के नेतृत्व में पूर्वांचल, पश्चिमांचल, उत्तरांचल, दक्षिणांचल एवं मध्यांचल की संयोजिका क्रमशः पूजा दूगड़, सिलीगुड़ी, सुमिता मदान, दाहोद (गुजरात) एवं सरला बरड़िया, कुनूर ऊटी, सीमू जैन, नोयडा (यूपी), प्रियंका नाहटा, हैदराबाद (तेलंगाना), सीमा गर्ग, जगराओ (पंजाब) के अथक प्रयासों से कार्यक्रम में शताधिक विद्यालय संचालक, प्राचार्य, शिक्षक आदि जुड़े।

त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन

हैदराबाद।

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति हैदराबाद द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस को त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिन जेनेसिस ग्रामर स्कूल ने ऑनलाइन कार्यशाला में सहभागिता की। इसके अलावा दीक्षा स्कूल, बोलारम और अविनाश कॉलेज ऑफ कॉमर्स में जाकर जीवन विज्ञान सर्टिफाइड ट्रेनर प्रियंका नाहटा ने बच्चों को जीवन विज्ञान से परिचित कराया।

उन्होंने बच्चों को आसन और यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाते हुए इनके लाभ समझाए और यह भी बताया कि हम अपने सर्वांगीण विकास के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं। जीवन विज्ञान सर्टिफाइड ट्रेनर दिव्या दुगड़ ने बच्चों को कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि और संकल्प करवाए एवं लाभ बताते हुए बच्चों को इन्हें अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

यह कार्यक्रम बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के उद्देश्य को केंद्रित करते हुए आयोजित किया गया। सभी स्कूलों के प्रतिनिधियों ने इस पहल की सराहना की।

संस्कारशाला कार्यशाला का हुआ आयोजन

पाली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत संस्कारशाला कार्यशाला का आयोजन मुनि सुमति कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में रमेश मरलेचा के निवास स्थान पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि सुमति कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। महिला मंडल ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष सुषमा डागा ने सभी का स्वागत किया। बच्चों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया।

मुनि सुमति कुमार जी ने बच्चों को सत्य, अहिंसा, आदि विषयों पर छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से प्रेरणा दी। अच्छी आदतें व हेल्दी फूड के फायदे बताएं। मंत्री सीमा मरलेचा ने मंगल भावना करवाई।

दीपिका वैदमुथा ने बच्चों को कुछ प्रश्न पूछे और विजेता को सम्मानित किया। मरलेचा परिवार और दीपिका वेदमूथा ने सभी बच्चों को पुरस्कार दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री सीमा मरलेचा ने किया।

फिट युवा हिट युवा का आयोजन

गाँधीनगर-दिल्ली। तेरापंथ किशोर मंडल गांधीनगर दिल्ली ने अपने प्रथम कार्यक्रम में अभातेयुप के आयामों के अंतर्गत फिट युवा हिट युवा कार्यक्रम का मिनी स्टेडियम, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली में आयोजन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। अध्यक्ष अशोक सिंघी ने पधारे हुए सभी युवा कार्यकर्त्ताओं का स्वागत व अभिनंदन किया। सभी युवा साथियों ने योग व एक्सरसाइज की। अंत मे आभार ज्ञापन किशोर मंडल प्रभारी निशांत दुगड़ ने किया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली के कई पदाधिकारी और तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक, सहसंयोजक उपस्थित रहे।

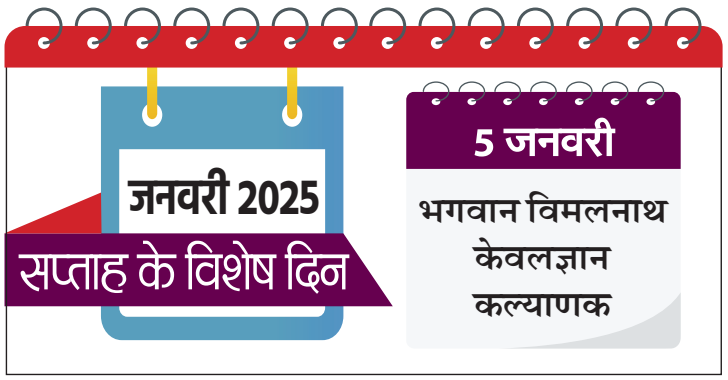

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।
5. समाचार भेजने वाला अपना नाम व मोबाइल नंबर समाचार के साथ अवश्य उल्लेख करें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

रक्तदान शिविरों के विभिन्न आयोजन

साउथ हावड़ा। तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन साउथ हावड़ा क्षेत्र के विवेक विहार में आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। परिषद के अध्यक्ष गगन दीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। शिविर में जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के मंत्री विनोद बैद, अभातेयुप संगठन मंत्री अमित सेठिया, सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, सम्पूर्ण प्रबंधन समिति, कार्यसमिति, विशिष्ट आमंत्रित सदस्य, किशोर मंडल, साधारण सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। रक्तदान शिविर में कुल 43 यूनिट का रक्त संग्रह हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष एवं ब्लड डोनेशन ड्राइव के पर्यवेक्षक विक्रम भंडारी एवं संयोजक अभिषेक खटेड़, भरत भंडारी, अजीत दुगड़, भानु प्रताप चोरड़िया, सुमीत बैद का विशेष श्रम रहा। उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने प्रायोजक डॉ. विजय कुमार जैन, लाइफ केयर ब्लड बैंक एवं सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

साउथ कोलकाता। अभातेयुप के तत्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कार्यक्रम के तहत तेरापंथ युवक परिषद, साउथ कोलकाता ने अर्बन साबुजयान कॉम्प्लेक्स के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। रक्त दान शिविर में कुल 28 यूनिट रक्त एकत्र किए गए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम के कॉर्डिनेटर प्रशांत श्यामसुखा, कन्वेनर विकास सुराणा एवं सौरभ श्यामसुखा का विशेष श्रम रहा।

पूर्वांचल, कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर-कोलकाता एवं पूर्वांचल–कोलकाता द्वारा आरडीबी ग्रुप के कैंपस रीजेंट गारमेंट पार्क में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 53 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की सक्रिय उपस्थिति रही। पीपल्स ब्लड बैंक ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

उधना। तेरापंथ युवक परिषद् उधना द्वारा ब्लड डोनेशन का आयोजन किया गया जिसमें 54 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। शिविर में परिषद् अध्यक्ष गौतम आंचलिया, मंत्री अर्पित नाहर, MBDD प्रभारी राकेश डांगी, सह प्रभारी मनोज डागा एवं परिषद् कार्यकर्त्ता, किशोर मंडल टीम का सराहनीय सहयोग रहा।

उत्तर कोलकाता। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर-कोलकाता द्वारा मारुति सुजुकी प्रीमियर कार वर्ल्ड, बीटी रोड में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से इस शिविर का शुभारंभ हुआ। शिविर में 52 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की सक्रिय उपस्थिति रही। पीपल्स ब्लड बैंक ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

हासन। मलनाड इंजीनियरिंग कॉलेज, रेड क्रॉस यूथ विंग, एच डी एफसी बैंक (हासन), हिम्स ब्लड बैंक के संयुक्त तत्वावधान में मलनाड इंजीनियरिंग कॉलेज में ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन हुआ। इस आयोजन में 208 यूनिट ब्लड का संग्रह हुआ। मलनाड इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. ए. जे. कृष्णैया, डॉ वेंकटेश राव कोली, रेड क्रॉस संस्थान के चेयरमैन एच. पी. मोहन, डायरेक्टर उदयकुमार, डिस्ट्रिक्ट मंत्री शबीर अहमद, एचडीएफसी बैंक से मधुसूदन आर, गिरीश प्रभाकर, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नितेश सुराणा, मंत्री मनीष तातेड, पूर्व अध्यक्ष गौरव गुलगुलिया, पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

पश्चिम बंगाल आंचलिक श्रावक सम्मेलन का हुआ सफल आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में पश्चिम बंगाल आंचलिक श्रावक सम्मेलन का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। सम्मेलन में हम और हमारा धर्मसंघ विषय पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - जिन शासन के चार अंग हैं- साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। श्रावक का अर्थ है जो 12 व्रतों का पालन करता है, जो श्रद्धावान है, विवेक संपन्न और क्रियाशील व कर्तव्य शील है। श्रावक के पांच कर्तव्य है श्रद्धा, वन्दना, विसर्जन, पर्युषण साधना, साधार्मिक वात्सल्य। श्रावक को देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखनी चाहिए। शास्ता के प्रति आस्था रखने से मुक्ति का रास्ता मिल जाता है। श्रद्धा परम दुर्लभ है। केवल धन का ही नहीं समय का, कषाय का भी विसर्जन करना चाहिए। सब आपस में प्रेम और सौहार्द से रहें। संघ की उतरती बात नहीं करनी चाहिए, संघ के प्रति अहोभाव रखना चाहिए। संघ आश्वास है, विश्वास है संघ शीत घर के समान है। श्रावक का नैतिक कर्तव्य है कि वह साधार्मिक वात्सल्य का विकास करे। धर्म में स्थित रहे। श्रावक का जीवन आम आदमी से विलक्षण होना चाहिए।

मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर पंचमडल सदस्य सुरेश गोयल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा - तेरापंथ धर्मसंघ आज्ञा तंत्र से चलता है। यहाँ आचार्य की आज्ञा ही सर्वोपरि है। इसलिए गुरु के चिंतन पर चिंतन नहीं करना चाहिए। महामंत्री विनोद बैद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- हमारा सौभाग्य है कि हम धर्मसंघ के अभिन्न अंग है। जब तक हम संघ समाज से जुड़े हुए हैं तब तक ही हमारा अस्तित्व है। श्रावक संदेशिका में लिखी बातों का पालन सभी को करना चाहिए। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल आंचलिक प्रभारी शिखरचंद लुणावत ने अपने विचार व्यक्त किये। स्वागत भाषण साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सुरेश गोयल ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री बसंत पटावरी ने किया। सम्मेलन के प्रथम सत्र का संचालन मुनि परमानन्द जी ने किया।

द्वितीय सत्र में मुनि जिनेशकुमार जी, मुनि परमानंद जी का प्रेरणादायी उद्बोधन हुआ। महामंत्री विनोद बैद ने श्रावकों की जिज्ञासाओं के समाधान देते हुए महासभा की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। इस सत्र में प्रकाश मालू ने भी विचार रखें । संचालन मंत्री बंसत पटावरी ने किया।

'पहले तोलें, फिर बोलें' कार्यशाला का आयोजन

आर.आर नगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में आयोजित Way to Happiness कार्यक्रम के सातवें चरण का आयोजन आर.आर. नगर महिला मंडल क्षेत्र के अंतर्गत बिडदी सरकारी मादरी हिरिया प्राथमिक विद्यालय में किया गया। इस कार्यशाला का विषय था 'पहले तोलें, फिर बोलें'। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन पटवारी के निर्देशन में किया गया। कार्यशाला की शुरुआत सुशीला देवड़ा द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। इसके बाद सीमा दक ने महाप्राण ध्वनि का अभ्यास करवाया। कार्यशाला में बच्चों को विभिन्न घटनाओं और कहानियों के माध्यम से समझाया गया कि मधुर भाषा का उपयोग दूसरों का दिल जीत सकता है। सही समय पर उचित शब्दों के चयन की महत्ता पर जोर दिया गया, यह बताया गया कि 'सोच-समझकर बोलें, न कि बोलने के बाद सोचें।' सही और गलत की पहचान करने के महत्व को रेखांकित करते हुए बच्चों को जीवन में इन आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। बच्चों के लिए मनोरंजक गेम्स का भी आयोजन किया गया, जिससे उन्हें सीखने में रुचि बनी रही। कार्यशाला के अंत में सभी बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप उपहार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का समापन पॉजिटिव एफर्मेशंस के साथ किया गया। इस आयोजन में संयोजिका पूनम दक का विशेष सहयोग रहा।

आचार्य महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में भिक्षु भक्ति का विशेष कार्यक्रम के साथ आज आचार्य महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मुनि चैतन्य कुमार अमन के निर्देशन व मुनि प्रतीककुमार जी के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। विशेष संगायक कमल छाजेड़ ने इस अवसर पर विशेष रूप से संघ गीतों का संगान कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। मुनि चैतन्य कुमार अमन का आज 47 वां दीक्षा दिवस था। मुनि चैतन्य कुमार अमन ने अपने वक्तव्य में कहा- भारतीय परम्परा में गुरू का सर्वाधिक महत्त्व होता है। जैन परंपरा में तीर्थकरों का प्रतिनिधित्व गुरु करते हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे भैक्षव शासन में 46 वर्ष पूर्व गुरूदेव तुलसी से दीक्षित होकर साधु संस्था में प्रवेश मिला। आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान का अवदान देकर बाल पीढ़ी के लिए महान उपकार किया, जिससे बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कारित होने का मौका मिल रहा है। मुनि अमन ने आगे कहा- यहां प्रवास कर रहे मुनिश्री मणिलालजी, मुनिश्री मुनिव्रतजी का मुझे आर्शीवाद प्राप्त हुआ। मुनिश्री धर्मेशकुमारजी, मुनिश्री गिरिशकुमारजी, मुनिश्री प्रतीककुमारजी के स्नेहिल शुभकामनाएं को मैंने प्राप्त किया। भिक्षु समाधि स्थल के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल आदि अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी ओर से शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल ने अपने भावनाएं प्रस्तुत करते हुए आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी तथा आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। संगायक कमल छाजेड़ को शॉल, साहित्य, दुपट्टा धारण करवाकर सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

प्रोफेशनल्स को धर्म से जोड़ने का माध्यम है टीपीएफ

जोधपुर।

तेरापंथ की नामकरण स्थली, जोधपुर में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (टीपीएफ) के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत जैन और महामंत्री मनीष कोठारी संगठन यात्रा के अंतर्गत पहुंचे। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में मेघराज तातेड़ गेस्ट हाउस, सरदारपुरा में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। टीपीएफ जोधपुर ब्रांच की उपाध्यक्ष डॉ. प्रियंका बैद ने अतिथियों का स्वागत किया। साध्वी कुंदनप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में टीपीएफ की स्थापना को आचार्य महाप्रज्ञ जी की दूरदर्शी सोच का परिणाम बताते हुए कहा कि यह संगठन युवाओं और प्रोफेशनल्स को धर्म और समाज से जोड़ने का माध्यम बना है। साध्वीजी ने यह भी कहा कि टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्री का अपनी संगठन यात्रा की शुरुआत जोधपुर से करना न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि यह संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और गुरुदेव के प्रति श्रद्धा को दर्शाता है। उन्होंने टीपीएफ के सफल और प्रभावशाली भविष्य की मंगलकामना की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत जैन ने अपने वक्तव्य में टीपीएफ की गतिविधियों का विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने बताया कि संगठन का उद्देश्य प्रोफेशनल्स को एक मंच प्रदान करना है, जिससे वे धर्म, समाज और प्रोफेशनल जीवन में संतुलन स्थापित कर सकें। उन्होंने ‘इन्वॉल्व टू मैटर’ थीम पर जोर देते हुए कहा कि यह अभियान सदस्यों को टीपीएफ से जोड़ने और समाजोपयोगी कार्यों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास है। उन्होंने चिकित्सा, शिक्षा और नेटवर्किंग जैसे क्षेत्रों में टीपीएफ द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी और ब्रांच के सदस्यों से आह्वान किया कि वे इन सेवाओं को समाज तक पहुंचाएं।

राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी ने टीपीएफ के आध्यात्मिक और समाजोपयोगी आयामों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि संगठन, गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार, सदस्यों के आध्यात्मिक विकास के लिए विशेष पाठ्यक्रम तैयार कर रहा है। इसके अतिरिक्त, संगठन कानूनी, चिकित्सा और करियर संबंधित परामर्श के लिए ऑनलाइन सेवाएं भी प्रदान कर रहा है। उन्होंने आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय और आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के सुचारू संचालन की जानकारी दी। साथ ही, उन्होंने जोधपुर में आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर की स्थापना के लिए स्थानीय शाखा के सदस्यों का आह्वान किया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मूलचंद तातेड़ और प्रदीप सिंघवी को 'फेलो मेंबर' के रूप में सदस्य बनाकर टीपीएफ पिन प्रदान की। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने धर्म संघ की सेवा और संगठन के प्रति समर्पण का महत्व बताया। साध्वी चारित्रयशा जी और साध्वी किरणयशाजी ने गीतिका प्रस्तुत कर संगठन की भावना को सशक्त किया।

इस अवसर पर टीपीएफ सेंट्रल जोन के मंत्री डॉ. मिलाप चोपड़ा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नरेश सिंघवी, तेरापंथ सभा जाटाबास के अध्यक्ष मूलचंद तातेड़, तेरापंथ युवक परिषद जोधपुर के अध्यक्ष मितेश जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष गोविंदराज पुरोहित, जैन विश्व भारती के संस्थापक कुलपति डॉ. महावीर राज गेलड़ा, टीपीएफ सेंट्रल जोन लीगल कन्वीनर निधि सिंघवी, डॉ. अनीता जैन सहित कई गणमान्य सदस्य और टीपीएफ कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ जोधपुर ब्रांच के मंत्री निखिल मेहता ने कुशलता से किया, और आभार ज्ञापन पूर्णिमा जैन द्वारा किया गया।

शिक्षा आजीविका का साधन नहीं, जीवन निर्माण का लक्ष्य हो

साउथ हावड़ा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी का जे. आई. एस. ग्रुप के मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों के मध्य प्रवचन हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है। सफलता चाहने मात्र से प्राप्त नहीं होती है।

सफलता के लिए सघन पुरुषार्थ जरूरी होता है। सफलता का महत्त्वपूर्ण सूत्र है- सहिष्णुता। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में संतुलित रहने वाला व्यक्ति सफलता को प्राप्त होता है। केवल धन कमाना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए।

जीवन में सेवाभाव भी होना चाहिए। व्यक्ति सदाचार व स्वालम्बन का जीवन जीए, नशामुक्त रहे। नशा जीवन को बर्बाद करता है। मुनि श्री ने आगे कहा व्यक्तित्व विकास में संयम की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, सकारात्मक चिंतन से जीवन निर्मल बनता है, आदतों का परिष्कार होता है। चरित्र से बढकर कोई शक्ति नहीं है। चरित्र गया तो सब कुछ गया। वही शिक्षा उपयोगी है जिसमें चरित्र का समावेश हो। शिक्षा सत्यं शिवं, सुन्दर का समन्वित रुप है। शिक्षा केवल आजीविका का साधन न हो जीवन निर्माण का लक्ष्य होना चाहिए।

मुनिश्री ने अनेक सम समायिक विषयों के बारे में बताते हुए ध्यान के प्रयोग कराए और विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने आभार व्यक्त किया।

कैंसर जागरूकता पर रैली का आयोजन

इरोड।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा कैंसर अवेयरनेस रैली का भव्य आयोजन किया गया। रैली को इरोड म्युनिसिपल ऑफिस से प्रारम्भ कर सेंथिल मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल पर समापन किया गया। डिप्टी कमिश्नर धनलक्ष्मी एवं मेयर नागारत्नम सुब्रमण्यम ने बैनर का उद्घाटन कर कैंसर जैसी घातक बीमारी से परिचित कराया। तत्पश्चात मेयर ने रैली को हरी झंडी दिखाई। उपासक हनुमानमल दुगड़ के द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ रैली का शुभारंभ किया गया। रैली में कई गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की। महिला मण्डल अध्यक्षा पिंकी भंसाली के नेतृत्व में महिला मण्डल की बहनें भी उपस्थिति रही। कैंसर जागरूकता पर निकाली गई रैली में इरोड नंदा मेडिकल कॉलेज के नर्सिंग की 100 छात्राओं ने स्लोगन, तख्तियां और बैनर सहित हिस्सा लिया।

सेंथिल हॉस्पिटल के ऑडिटोरियम में डॉ. गोकुल प्रिया द्वारा कैंसर बीमारी के लक्षण, बचाव एवं टेस्टिंग के बारे में जानकारी दी गई। सभी अध्यक्षों का सम्मान किया गया। डॉ. प्रिय का सम्मान पिंकी भंसाली एवं अन्य सभी अध्यक्षों के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन महिला मण्डल की सहमंत्री प्रज्ञा सुराणा और सभी का स्वागत अध्यक्षा पिंकी भंसाली ने किया। लगभग 250 बहनें रैली में शामिल हुईं।

CPS कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

साउथ हावड़ा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉंफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कार्यशाला का दीक्षांत समारोह मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य एवं अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया की अध्यक्षता में प्रेक्षा विहार, साउथ हावड़ा में आयोजित हुआ।

मुख्य अतिथि अमरचंद दुगड़, शाखा प्रभारी संदीप डागा, तेयुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगन दीप बैद के साथ संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी की गरिमामय उपस्थिति रही। अभातेयुप सीपीएस प्रशिक्षक के रूप में सुजल बोहरा, ललित बेगवानी, अनिला सेठिया उपस्थित थे, जिन्होंने अलग-अलग दिन में प्रशिक्षण प्रदान किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा - दुनिया में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें संपूर्ण रूप से अभिव्यक्ति देने की क्षमता है। मनुष्य अच्छा वक्ता बन सकता है। अच्छा वक्ता बनने के लिए पहले अच्छा श्रोता बने। उसके लिए सबसे पहले जो वक्ता बोलते हैं उसे एकाग्रता के साथ सुनें, साथ में अच्छा साहित्य पढ़ें, उसे समझें और आचरण में लाएं तो अच्छा वक्ता बन सकते हैं। अच्छा वक्ता बनने के लिए सब तरह की सामग्री होनी चाहिए। परिषद् को देखकर बोलना चाहिए। निर्भीकता के साथ बोलना चाहिए।

तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने सभी का स्वागत करते हुए मंगलकामना प्रेषित की। राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया ने अपने वक्तव्य से सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

मुख्य अतिथि अमरचंद दुगड़ ने कार्यशाला की प्रशंसा की एवं सभी संभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए सभी के भविष्य के प्रति मंगलकामना की। मुख्य प्रक्षिशक अनिला सेठिया ने सभी संभागियों को मंच पर अभिव्यक्ति के विभिन्न गुण सिखाये। इससे पूर्व महाश्रमण भजन मंडली ने विजय गीत का संगान किया एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन संगठन मंत्री अमित सेठिया ने किया। सीपीएस कार्यशाला के 22 संभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

तेयुप साउथ हावड़ा द्वारा मुख्य अतिथि, अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री, ट्रेनर्स का सम्मान करते हुए सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

सीपीएस टीम के अथक परिश्रम से कार्यशाला सफलतम रही। कार्यशाला के सुव्यवस्थित आयोजन में प्रायोजक बाबू लाल दुगड़, मनोज-सुमन, राहुल-प्रेक्षा कोठारी परिवार का आभार व्यक्त किया गया। संयोजक नवीन सेठिया का अथक श्रम नियोजित हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

कैंसर जागरूकता रैली व टॉक शो का आयोजन

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज' के अंतर्गत चल रहे एक वर्षीय कैंसर जागरूकता अभियान के तहत कैंसर जागरूकता रैली व टॉक शो का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा किया गया।

रैली का शुभारंभ सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा द्वारा नमस्कार महामंत्र व मंगल पाठ से हुआ। रैली महावीर स्थल से फैंसी बाजार होते हुए तेरापंथ धर्मस्थल पहुंची।

रैली का एकमात्र उद्देश्य था कि समाज व्यसनमुक्त बने व खानपान शुद्ध हो जिससे कि कैंसर जैसी घातक बीमारी से काफी हद तक बचा जा सके। तत्पश्चात टॉक शो का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया जिसकी शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत किया व जागरूकता अभियान की जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में जयपुर के महात्मा गांधी हॉस्पिटल से पधारे स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. विजय नाहटा एवं डॉ. रूमा विश्वास दत्ता थे। संयोजिका पिंकी बैंगानी व राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य सुचित्रा छाजेड़ ने चिकित्सकों का परिचय दिया।

डॉ. विजय नाहटा ने ब्रेस्ट कैंसर के लक्षण के बारे में बताने के साथ स्व परीक्षण के बारे में भी अच्छे से समझाया। 40 वर्ष से ऊपर की महिलाओं में गर्भाशय से संबंधित होने वाली बीमारियों के लक्षणों तथा उनके रोकथाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस सेमिनार की दूसरी मुख्य वक्ता डॉ. रूमा विश्वास दत्ता ने बहुत ही सरल अंदाज में स्वस्थ जीवन शैली के पांच सूत्र - गुड डाइट, एक्सरसाइज, पानी, अच्छी नींद, प्रॉपर वेट (वजन) विषयों के बारे में बताया। बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी डॉक्टरो द्वारा किया गया।

कार्यशाला में मारवाड़ी महिला सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच कामाख्या शाखा, स्थानकवासी संप्रदाय, दिगंबर जैन संप्रदाय, उल्लास महिला समिति तथा सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी गण व सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम की संयोजिका शिखा बोथरा, पिंकी बैंगानी, रजनी पगारिया, शर्मिला महणोत का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। शिखा बोथरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंडल की सभी बहनों का सराहनीय योगदान व उपस्थिति रही।

रोलिंग शील्ड संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में तेरापंथी सभा चेन्नई के तत्वावधान में 'केसरीचंद बालचंद भटेरा रोलिंग शील्ड संगीत प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

अर्हत वंदना के पश्चात प्रतिभागियों द्वारा सुमधुर गीतों की मोहक प्रस्तुतियों का अंकन करते हुए निर्णायक द्वय हेमंत डुंगरवाल एवं दीपमाला भंडारी के संयुक्त निर्णय के आधार पर प्रत्यूष श्रीश्रीमाल ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड पर अधिकार किया। वर्षा भंडारी सामरा द्वितीय और पूजा बैदमुथा तृतीय स्थान पर रहीं। सभाध्यक्ष अशोक खतन्ग ने विजेता को शील्ड प्रदान की तथा सभा की ओर से सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने प्रतिभागियों के उत्साह एवं गायन कला की सराहना करते हुए सबके प्रति मंगलकामना की। मुनि हेमंत कुमारजी व निर्णायक द्वय ने मधुर गीतों की प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता का संचालन संयोजक नीरज गोगड़ ने किया। कार्यक्रम के सफल सम्पादन में राजेन्द्र भंडारी और मनोज डुंगरवाल का विशेष श्रम व सहयोग रहा। मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पृष्ठ 1 का शेष

ज्ञान के साथ हो विवेक और...

पूज्य वर ने आगे कहा - वड़ोदरा में साध्वी पंकजश्रीजी का चतुर्मास था। उनके क्षेत्र में आज आना हुआ है। चतुर्दशी के सन्दर्भ में प्रेरणा प्रदान करवाते हुए आचार्य श्री ने चारित्रात्माओं को आचार-विचार के प्रति समुचित जागरूकता हेतु उत्प्रेरित किया।

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदितकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य प्रवर मंत्रविद् हैं। उनकी वाणी आत्मा से जुड़ी रहती है। उनका उद्बोधन सबके लिए प्रेरणादायी होता है।

पूज्यवर ने फरमाया कि मुनिश्री उदितकुमारजी में मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी की छवि दिखाई देती है। आप मार्ग में भी क्षेत्रों में ज्ञानशाला को संभालते रहे। तेरापंथी सभा-दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया तथा राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोहिया आदि ने आचार्यश्री से सन् 2028 का मर्यादा महोत्सव दिल्ली में करने की अर्ज की तो आचार्यश्री ने अपनी विशेष कृपा प्रदान करते हुए घोषणा करते हुए कहा - 'सन् 2027 के चतुर्मास के बाद सन् 2028 का मर्यादा महोत्सव बृहत्तर दिल्ली में करने का भाव है।'

वडोदरा में चतुर्मास करने वाली साध्वी पंकजश्रीजी के सिंघाड़े की ओर से साध्वी शारदाप्रभाजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने संकल्प स्वरूप कल्पवृक्ष पूज्यवर को समर्पित किया। तेयुप वड़ोदरा द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

गुस्से का भाव न आ जाए। जो मिला है उसका बढ़िया उपयोग करे, अहंकार न करे। हम साधु-साध्वियों को सम्यक्त्व युक्त चारित्र प्राप्त है, इसकी तुलना में हीरे-पन्ने भी ना-कुछ है। चारित्र के सामने राजा तो क्या देव भी प्रणत हो जाते हैं। चारित्र और सम्यक्त्व सबसे बड़ी सम्पदा है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंग वश प्रश्न उपस्थित किया - हमारे यहां तेरह नियम हैं। पांच महाव्रतों और रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान तो हम ले लेते हैं, परन्तु पांच समिति और तीन गुप्ति का त्याग कब लेते हैं ?

ये आठ प्रवचन माताएं हैं जो महाव्रतों की सुरक्षा करने वाली हैं। इनके प्रति हम जागरूक रहें।

पूज्यप्रवर ने बहुश्रुत परिषद के सदस्यों को आशीर्वचन प्रदान कराते हुए दिल्ली की विहार कर रहे बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री उदितकुमारजी आदि ठाणा 3 एवं मुनि अभिजीतकुमारजी ठाणा 2 को पावन प्रेरणा प्रदान करवाई।

बोलती किताब

पहला सुख निरोगी काया

इस जगत में जो दृश्य हे,दिखाई देता हे, वह बहुत थोड़ा है। जो अदृश्य है, दिखाई नहीं देता, वह बहुत ज्यादा है। तुलना करें तो कहा जा सकता है कि दृश्य है एक बिंदु और अदृश्य है एक सिंधु।

अहंकार की भी बड़ी समस्या है। जहां अहंकार है, वहां आदमी अच्छा नहीं बोलेगा, अशिष्ट भाषा का प्रयोग करेगा। व्यक्ति मूर्ख, बेवकूफ आदि शब्दों का प्रयोग या तो क्रोध में करता है या अहंकार में करता है। अनादिकाल से आदमी ने यह भ्रांति पाल रखी है कि मैं बहुत उपयोगों आदमी हूँ ,और मेरे बिना लोगों का काम नहीं चलेगा, लेकिन काम तो चल रहा हैं।

व्यक्ति यह मान कर चले कि आज जिन चीजें का संयोग हुआ है और जिन्हें प्राप्त कर हम सुख और प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे है, यही एक दिन हमें रूलाएगी, क्योंकि संयोग के पीछे-पीछे वियोग चल रहा है। हम वर्तमान जीवन की प्रक्रिया का आंकलन करें। आवश्यकता कम है, आसक्ति ज्यादा। इन्द्रिय, मन और भाव- ये आसक्ति के स्रोत बनते हैं।

लोभ आदमी की सहज प्रवृत्ति हैं। पदार्थ के साथ आदमी को जीना है तो पदार्थ का संग्रह भी उसे करना होता है। जितनी जरूरत है, उतना संग्रह होता तो शायद समस्या नहीं बढ़ती, किंतु आवश्यकता और सग्रह में जब असंतुलन आ गया, संग्रह आदमी की वृत्ति के साथ जुड़ गया तो समस्या पैदा होनी ही थी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान शिविर की आयोजन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के भिक्षु आराध्यम् में तृतीय मासिक प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर प्रेक्षागीत के संगान से मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात् मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा- जीवन को टिकाने का आधारभूत तत्त्व है- भोजन और पानी। किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है हमारा श्वास-प्रश्वास। भोजन पानी के बिना कुछ समय के लिए जीवन को टिकाया जा सकता है किन्तु श्वास के बिना जीवन को टिकाए रखना असंभव होता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग में श्वास और विश्वास से किए गए प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। अतः प्रत्येक साधक विश्वास के साथ प्रयोग करे तो अवश्य लाभ प्राप्त कर सकता है।

मुनि धर्मेशकुमार जी ने शिविर का मार्गदर्शन करते हुए अपने संबोधन में कहा- शिविर साधना का लक्ष्य जीवन में निर्धारित लक्ष्य की ओर विकास करना है। शिविर में आन्तरिक शक्तियों को जागृत करना है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखते हुए व्यक्ति अनेक प्रयोगों के द्वारा विशेष उपलब्धि हासिल करता है जिससे वह अध्यात्म के क्षेत्र की ओर अधिक से अधिक विकास कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन स्वस्तिक जैन ने किए।

जीवन में कमाऊ पूत की तरह करें धर्म साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

वरेड़िया।
09 दिसम्बर, 2024

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ वरेड़िया के प्राथमिक मिश्र शाला में पधारे। प्रज्ञा पुरुष ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि जीवन को चार भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम पच्चीस वर्ष शिक्षा के, बाद के पच्चीस वर्ष गृहस्थ जीवन में कमाई, विवाह, संतान आदि में लग जाते हैं। अगले 25 वर्ष वानप्रस्थ आश्रम और फिर 75 के बाद का समय तो संन्यास में लगा देना चाहिए। यह चार आश्रमों का मार्गदर्शन है जो जीवन के विभिन्न पड़ावों पर मोड़ लेना की प्रेरणा देता है। 75 वर्ष के बाद तो गृहस्थ में रहते हुए भी निवृत्ति की ओर बढ़ना चाहिए। सामाजिक कार्यों से भी मुक्ति लेकर अपना समय आध्यात्मिक सेवा व धर्म ध्यान में लगाना चाहिए।

> मनुष्य जन्म मूल पूंजी है, देवगति में जाना लाभ कमाना है और नरक-तिर्यन्च में जाने वाले मूल पूंजी गंवाने वाले होते हैं। गृहस्थों को ध्यान देना चाहिए कि हम किस प्रकार जी रहे हैं? मूल को बढ़ाया है, मूल को सुरक्षित रखा है या मूल को ही गंवा दिया है?

हमारे चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य तो संत होते हुए भी पचहत्तर वर्ष से पहले ही निवृत्ति लेकर साधना व धर्म ध्यान में लग गए। हम सब तीर्थंकर भगवान के बेटे हैं, हमें जो मनुष्य जन्म मिला है, उसमें धर्म ध्यान-अध्यात्म की पूंजी इकट्ठी करें। यह कमाने वाले पुत्र के समान है। जो मनुष्य जन्म पाकर भी धर्म-ध्यान नहीं करते, न ज्यादा पाप करते हैं, उन्होंने मूल पूंजी को सुरक्षित रख लिया। कुछ ऐसे मनुष्य जो बुरे कामों में, बुरे पापों में लिप्त होते हैं, वे मरकर नरक में जाते हैं और मूल को ही गंवा देते हैं।

मनुष्य जन्म मूल पूंजी है, देवगति में जाना लाभ कमाना है और नरक-तिर्यन्च में जाने वाले मूल पूंजी गंवाने वाले होते हैं। गृहस्थों को ध्यान देना चाहिए कि हम किस प्रकार जी रहे हैं? मूल को बढ़ाया है, मूल को सुरक्षित रखा है या मूल को ही गंवा दिया है? जीवन में धर्म-अध्यात्म की साधना करें, कमाऊ पूत की तरह बनें। सम्यक्त्व अवस्था में आयुष्य बंधा है तो वह देवगति में जाएगा। मिथ्यात्व अवस्था में आयुष्य का बंध होगा तो वह आगे मनुष्य या तिर्यंच गति में जाएगा। हमें तो मोक्ष को प्राप्त करना है। मानव जन्म पूंजी को हम धर्म साधना कर शत गुणित करने का प्रयास करें।

पूज्यवर के स्वागत में प्राथमिक मिश्र शाला की प्रिंसिपल शमीम बेन ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विनय और स्थिरता हैं ज्ञान प्राप्ति में साधक : आचार्यश्री महाश्रमण

देथाण।
10 दिसम्बर, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमणजी ने लगभग 14 किमी का विहार कर देथाण प्राथमिक मिश्रशाला में पधारकर मंगल प्रेरणा प्रदान की। ज्योतिचरण ने फरमाया कि उत्तराध्ययन सूत्र में शिक्षा प्राप्ति में बाधक पांच कारण बताए गए हैं। इनमें पहला तत्व है - अहंकार। जिस प्रकार एक खंभा नहीं झुकता, उसी प्रकार अहंकारी व्यक्ति भी नहीं झुकता। हालांकि खंभा अच्छा भी होता है, जिस पर पूरा प्रासाद टिका रहता है। अलग-अलग संदर्भों में इसके भाव भिन्न हो सकते हैं।

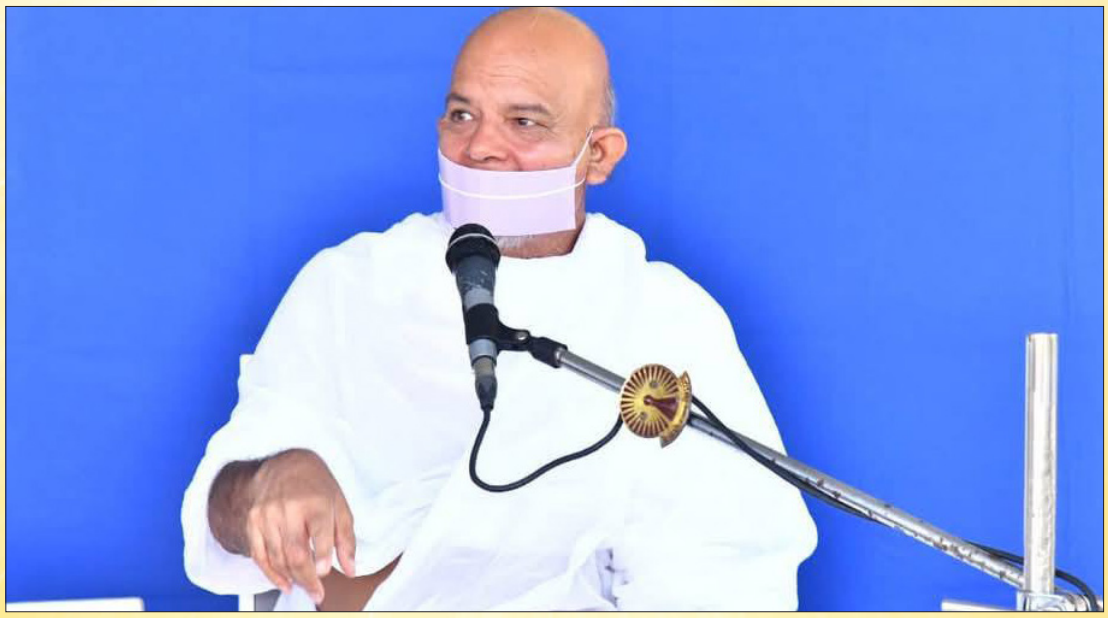

गुरुदेव श्री तुलसी ने 'शासन स्तंभ' अलंकरण प्रदान करना शुरू किया था। 'शासन स्तंभ' अलंकरण, 'शासनश्री' और 'शासन गौरव' से भी बड़ा सम्मान है। गुरुदेव श्री तुलसी ने अनेकों मुनियों को इस अलंकरण से विभूषित किया था। मैंने भी कई मुनियों को यह सम्मान प्रदान किया है।

जहाँ झुकना उचित लगे, वहाँ झुकना चाहिए; और जहाँ अनुचित लगे, वहाँ झुकना नहीं चाहिए। ज्ञान प्राप्ति में अहंकार बाधा बनता है। ज्ञानदाता के सामने झुकने से ही ज्ञान प्राप्ति संभव है। 'विनय' ज्ञान प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधक तत्व है।

दूसरा बाधक तत्व है - क्रोध। ज्ञानदाता के प्रति क्रोध नहीं होना चाहिए। अहंकार और क्रोध ज्ञान प्राप्ति में ढक्कन की तरह काम करते हैं। तीसरा बाधक तत्व है - प्रमाद। प्रमाद के कारण यदि विद्यार्थी नशे में डूब जाए तो विद्या का सम्यक अर्जन संभव नहीं हो सकता।

चौथा बाधक तत्व है - रोग। यदि कोई व्यक्ति बीमार हो, तो अध्ययन, स्वाध्याय, सीखने और परिवर्तित होने जैसे कार्य भी अधूरे रह जाते हैं। पाँचवां बाधक तत्व है - आलस्य। यह मानव शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है। आलस्य के शिकार विद्यार्थी के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो जाता है। व्यक्ति को इन पाँच तत्वों से बचना चाहिए।

आचार्य श्री ने कहा कि अध्यात्म विद्या का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी उसका अहंकार नहीं होना चाहिए। ज्ञानदाता कोई पक्षपात नहीं करता। अहंकार और चित्त की अस्थिरता ज्ञान में बाधा उत्पन्न करती है। वहीं, विनय और स्थिरता ज्ञान प्राप्ति के लिए सहायक होते हैं। किसी भी बात का सोच-समझकर जवाब देना चाहिए। हर जगह जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए।

ज्ञानदाता के प्रति विनय और कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। यदि ज्ञान की गहराई में जाया जाए और विनय व स्थिरता बनाए रखी जाए, तो सफलता निश्चित है।

उद्यम अच्छा हो और इन पाँच बाधक तत्वों से बचा जाए, तो अच्छा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में प्राथमिक मिश्रशाला की शिक्षिका सोनल चौहान ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

धर्माराधना से अपनी आत्मा..

पूर्व के पुण्यकर्मों से वर्तमान जीवन में सुख प्राप्त हो रहा है, पर पूर्वकृत पुण्य धीरे-धीरे उदय में आकर क्षीण हो रहे हैं। आगे के लिए भी आदमी को धर्म-ध्यान के माध्यम से सुख प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। त्याग, तपस्या, साधना, स्वाध्याय आदि के द्वारा व्यक्ति को अपनी आत्मा को मित्र बनाने का प्रयास करना चाहिए। आदमी यह सोचे कि मैं धर्म करूं और पुण्य का खजाना और भरूं। पुण्य छोटी बात है, संवर, निर्जरा बड़ी बात है। हम संवर-निर्जरा से उत्कृष्ट मोक्ष की अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करें। धर्म की आराधना करना भी भाग्य की बात है। जीवन में धार्मिक-आध्यात्मिक साधना का प्रयास हो।

उम्र बढ़ने के साथ धर्म की पूंजी भी बढ़ानी चाहिए। मानव धर्माराधना के द्वारा अपनी आत्मा को मित्र बनाने का प्रयास करे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारीजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
23 दिसम्बर- 29 दिसम्बर, 2024

मन रूपी चित्रपट्ट पर पिक्चर लाने वाला है मोहनीय कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

जाम्बुवा।
13 दिसम्बर, 2024

अध्यात्म जगत के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी पोरगांव से विहार कर जाम्बुवा के नमन आइडियल स्कूल में पधारे। जिनवाणी का रसास्वाद कराते हुए युग पुरूष ने फरमाया कि पुरूष के अन्दर अनेक वृत्तियां होती हैं और वृत्ति से प्रवृत्तियां होती हैं। तीन शब्द हो जाते हैं- वृत्ति, प्रवृत्ति और निवृत्ति। हमारे भीतर लोभ, माया, मान, क्रोध, राग-द्वेष आदि कई वृत्तियां है जिन्हें संज्ञा के रूप में देखा जा सकता है। संज्ञा नाम रूप में भी होती है। आदमी के भीतर हिंसा की वृत्ति भी होती है।

उदाहरण के तौर पर पूज्यवर ने फरमाया कि प्राणातिपात - पाप स्थान, प्राणातिपात - आश्रव और प्राणातिपात - बन्ध, ये तीन शब्द हैं। जिस कर्म के उदय से प्राणी हिंसा करता है वह पाप स्थान है। जो हिंसा की प्रवृत्ति है, वो आश्रव है और हिंसा करने से नए पाप कर्म का बंध हो रहा है, वह बन्ध है। भूत, वर्तमान और भविष्य का यह संबंध है। इसी प्रकार अन्य पापों के भी तीन-तीन प्रकार हो सकते हैं।

> प्रश्न हो सकता है कि मोहनीय कर्म का उदय है तो क्या योग शुभ होगा ही नहीं? पूज्यवर ने समाधान देते हुए फरमाया कि उदय भी दो प्रकार का होता है। एक तो मोहनीय कर्म का उदय सुप्त अवस्था का उदय और दूसरा मोहनीय कर्म के उत्तेजित या जागृत अवस्था का उदय। सुप्त अवस्था में मोहनीय का उदय है वह योगों को अशुभ नहीं कर सकता, जागृत अवस्था में मोह का उदय हो तब हमारे योग अशुभ बन सकते हैं।

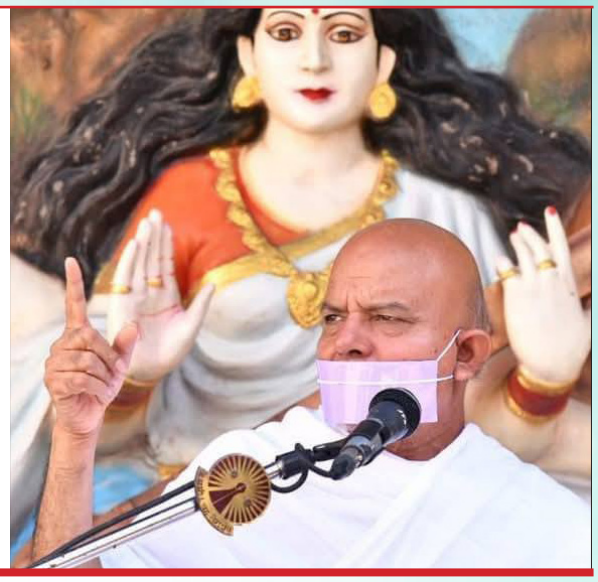

हमारे भीतर बुरे भाव के रूप में दुर्वृत्ति भी है तो अच्छे भाव के रूप में सुवृत्ति भी हो सकती है। दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। हम दोनों रूप में वृत्ति को देख सकते हैं। आदमी अनेक चित्तों वाला होता है। उसके भावों में परिवर्तन होता रहता है, परिस्थितियां, विचार बदल सकते हैं। व्यक्ति के अशुभ योग होते हैं वे तो ऊपर से हैं। अशुभ योगों को बनाने वाला मोहनीय कर्म का उदय भाव है। योग उजले या मैले, मोहनीय कर्म के दूर रहने से या मोहनीय कर्म के उदय से बनते हैं। हमारे मन, वचन, काय तीन योग हैं। मोहनीय कर्म का उदय तो छठे गुणस्थान तक वालों के तो हर समय होता रहता है।

प्रश्न हो सकता है कि मोहनीय कर्म का उदय है तो क्या योग शुभ होगा ही नहीं? पूज्यवर ने समाधान देते हुए फरमाया कि उदय भी दो प्रकार का होता है। एक तो मोहनीय कर्म का उदय सुप्त अवस्था का उदय और दूसरा मोहनीय कर्म के उत्तेजित या जागृत अवस्था का उदय। सुप्त अवस्था में मोहनीय का उदय है वह योगों को अशुभ नहीं कर सकता, जागृत अवस्था में मोह का उदय हो तब हमारे योग अशुभ बन सकते हैं।

योग की पृष्ठभूमि में लेश्या, अध्यवसाय, परिणाम को देख सकते हैं। अध्यवसाय हमारे बन्धन और निर्जरा के कारण बन सकते हैं। मन ही बन्ध और मोक्ष का कारण बनता है। जिसके मन नहीं होता वो सातवीं नरक में नहीं जा सकता। संज्ञी मनुष्य सातवीं नरक में जा सकता है तो अनुत्तर विमान और मोक्ष में भी जा सकता है। संज्ञी मनुष्य ही केवलज्ञानी बन सकता है। मन के अच्छे परिणामों से महानिर्जरा हो सकती है तो मन के खराब परिणाम महापाप का बन्ध भी करा सकते हैं। तंदुल मत्स्य छोटा सा प्राणी है, वह सातवीं नरक में जाने योग्य कर्मों का बंध कर लेता है। मन तो एक तरह का चित्रपट्ट है उस पर पिक्चर लाने वाला मोहनीय कर्म ही है। यही अच्छी या खराब पिक्चर लाने वाला है।

इसलिए व्यक्ति को अपने भावों को शुद्ध और सुवृत्ति की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर के निर्देशानुसार मुख्य मुनि महावीरकुमार जी, मुनि उदितकुमार जी, मुनि दिनेशकुमार जी एवं मुनि योगेशकुमार जी ने भी मोहनीय कर्म की सुप्त-जागृत अवस्था एवं कर्म बंधन के विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त किए। बहिर्विहार से पहुंची साध्वी लब्धिश्रीजी ने पूज्यवर के समक्ष अपने हृदयोद्घार व्यक्त करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। पूज्य वर के स्वागत में स्कूल के शिक्षक कल्पित भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। वड़ोदरा सभाध्यक्ष सुशील कोठारी ने वक्तव्य एवं तेरापंथ महिला मंडल, वड़ोदरा ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।